



नवम्बर, 2024

CUET (UG)

समसामयिक घटनाएँ और सामान्य ज्ञान

CUET (UG) जनरल टेस्ट हेतु



For More Information Visit www.drishticuet.com or Contact on 8010-699-000

In the journey towards achieving a distinguished career, choosing the right guide is as crucial as the aspirant's dedication and hard work. Drishti, with its pioneering CUET (UG) program, stands as a beacon of excellence for young aspirants.

Admissions Open in English & Hindi Medium for CUET (UG) Foundation and Crash Courses

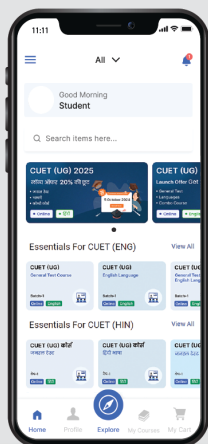
CUET (UG) Foundation & Crash Courses in English Medium

- CUET (UG) General Aptitude Test
- CUET (UG) English Language
- CUET (UG) History Domain
- CUET (UG) Political Science Domain
- CUET (UG) Geography Domain
- CUET (UG) Psychology Domain
- CUET (UG) Economics Domain
- CUET (UG) Mathematics Domain
- CUET (UG) Business Studies Domain
- CUET (UG) Accountancy Domain
- CUET (UG) Chemistry Domain
- CUET (UG) Physics Domain
- CUET (UG) Biology Domain
- CUET (UG) Combo (General Aptitude Test + English Language)

CUET (UG) फाउंडेशन और क्रेश कोर्सेस हिंदी माध्यम में

- CUET (UG) जनरल एप्टीट्यूड टेस्ट
- CUET (UG) हिंदी भाषा
- CUET (UG) इतिहास डोमेन
- CUET (UG) राजनीति विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) भूगोल डोमेन
- CUET (UG) अर्थशास्त्र डोमेन
- CUET (UG) समाजशास्त्र डोमेन
- CUET (UG) भौतिक विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) रसायन विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) जीव विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) Combo (जनरल एप्टीट्यूड टेस्ट + हिंदी भाषा)

Key Features of Drishti CUET (UG) Courses



Drishti Learning App

Get that 'Online Edge' in your preparation for CUET (UG), all from the convenience of your home.



Website



YouTube



PYQ's as Quizzes



Scan me for English Courses



Scan me for Hindi Courses

For more information please contact on **87501-87501**

विवरणिका

1. संवैधानिक/प्रशासनिक घटनाक्रम

- संविधान दिवस 2024 : एकता और लोकतंत्र की भावना का जश्न 1
- भारतीय वित्त आयोग:राजकोषीय संघवाद का एक स्तंभ 1
- भारत के अटॉर्नी जनरलऔर सॉलिसिटर जनरल 2
- संसद के सत्र 3
- सर्वोच्च न्यायालय ने प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों की वैधता की पुष्टि की 3

2. भूगोल

- इंडोनेशिया के माउंट लेवोटोबी लाकी-लाकी में ज्वालामुखी विस्फोट 5
- फेंगल तूफान..... 5

3. पर्यावरण और पारिस्थितिकी

- COP29 अजरबैजान के बाकू में शुरू हुआ 7
- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) का 7 वां सत्र 7
- देश का 56 वां टाइगर रिजर्व छत्तीसगढ़ में अधिसूचित 8

4. भारतीय अर्थव्यवस्था

- भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन..... 10
- आरबीआई ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में पुनर्वर्गीकृत करने के लिए परिचालन ढांचा जारी किया 11

5. सामान्य विज्ञान

- भारत का पहला एनालॉग अंतरिक्ष मिशन: चंद्र अन्वेषण की दिशा में एक एक महत्वपूर्ण कदम..... 13
- भारत का एयरोस्पेस क्षेत्र में उदय: पहला भारत निर्मित C295 विमान क्षितिज पर 13
- दुनिया का पहला लकड़ी का उपग्रह, लिग्नोसैट..... 14
- भारत प्रोबा-3 लॉन्च करेगा: सूर्य के कोरोना के लिए एक मिशन 15
- पिनाका रॉकेट प्रणाली 15
- पहला अंतरिक्ष अभ्यास 'अंतरिक्ष अभ्यास - 2024' 16
- डीआरडीओ ने ओडिशा तट से लंबी दूरी की भूमि पर हमला करने वाली क्रूज मिसाइल का पहला उड़ान परीक्षण किया 16
- भारत ने अपनी पहली लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया 17

विवरणिका

6. इतिहास

- प्रथम एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन 2024 19
- राष्ट्र लाला लाजपत राय को उनकी 96वीं पुण्यतिथि पर स्मरण कर रहा है 20

7. विश्व मामले

- प्रधानमंत्री मोदी रियो डी जेनेरियो में जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे 21
- डुमा बोको को बोत्सवाना का छठा राष्ट्रपति घोषित किया गया 21
- अभ्यास ऑस्ट्राहिन्द 2024 22
- नवीन रामगुलाम ने मॉरीशस चुनावों में 'ऐतिहासिक जीत' का जश्न मनाया 23

8. विविध

- महत्वपूर्ण दिन 24
- खेल 27
- प्रमुख व्यक्तित्व 27
- सरकारी योजनाएँ 31
- पुरस्कार और सम्मान 35
- पुस्तकें एवं लेखक 40
- रिपोर्ट और पत्रिकाएँ 41

संविधान दिवस 2024 : एकता और लोकतंत्र की भावना का जश्न

परिचय

- भारतीय संविधान की विरासत का सम्मान करने के लिए यह दिवस 2015 से प्रतिवर्ष 26 नवंबर को मनाया जाता है।
 - ◆ गतिविधियों में प्रस्तावना पढ़ना, स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों में बहस और चर्चाएं शामिल हैं।
- ऐतिहासिक महत्व : भारतीय संविधान 26 नवंबर, 1949 को अपनाया गया था, जो एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।
- मूल आदर्श
 - ◆ न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित।
 - ◆ ब्रिटिश संसदीय प्रणाली, अमेरिकी अधिकार विधेयक और फ्रांसीसी आदर्शों जैसे मॉडलों से प्रेरित होकर, इसमें भारतीय लोकाचार को भी शामिल किया गया है।
- जीवित दस्तावेज़
 - ◆ संविधान गतिशील है, जिसमें अब तक 105 संशोधन हो चुके हैं, जो सामाजिक और वैश्विक परिवर्तनों के अनुरूप विकसित हो रहा है।
 - ◆ आधारभूत सिद्धांतों को अनुकूलनशीलता के साथ संतुलित करता है।
- समावेशिता और एकता
 - ◆ सभी समुदायों और व्यक्तियों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करना तथा राष्ट्रीय शक्ति के रूप में विविधता पर बल देना।
 - ◆ नागरिक सशक्तीकरण और राज्य की जवाबदेही को बनाए रखने के लिए मौलिक अधिकारों और राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों को शामिल किया गया है।
- संस्थागत लोकतंत्र
 - ◆ स्वशासन और लोकतांत्रिक भागीदारी के लिए रूपरेखा प्रदान करता है।
 - ◆ नागरिकों को शासन को आकार देने और जवाबदेही की मांग करने के लिए सशक्त बनाता है।

संविधान सभा

- प्रारंभ में इसमें 389 सदस्य थे, जो विभाजन के बाद घटकर 299 रह गये।
- स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों, कानूनी विशेषज्ञों और 15 उल्लेखनीय महिलाओं सहित विविध प्रतिनिधित्व।
- प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में संविधान का मसौदा तैयार किया गया।



संविधान सौंपे जाने के समय बी.आर. अंबेडकर और राजेंद्र प्रसाद एक दूसरे को बधाई देते हुए।

भारतीय वित्त आयोग: राजकोषीय संघवाद का एक स्तंभ

परिचय

- यह भारत के राजकोषीय संघवाद के लिए महत्वपूर्ण संवैधानिक निकाय है।
- इसका उद्देश्य केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय संसाधनों के उचित वितरण की सिफारिश करके समान विकास सुनिश्चित करना है।
- भारत के राष्ट्रपति द्वारा गठित, इसकी स्थापना हर पांच वर्ष में या आवश्यकता पड़ने पर पहले भी की जाती है।
- संवैधानिक प्रावधान
 - ◆ अनुच्छेद 280 : वित्त आयोग की स्थापना और उसके कार्य।

- ◆ अनुच्छेद 281 : वित्त आयोग की सिफारिशों की रूपरेखा।
- ◆ एफसीआई भारत के संविधान के तहत काम करता है , जिससे यह एक अर्ध-न्यायिक निकाय बन जाता है।
- ◆ संघटन
- **नियुक्ति:** अध्यक्ष और चार सदस्यों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
- **सदस्यों की योग्यताएं**
 - ◆ वित्त आयोग अधिनियम 1951 में निम्नलिखित योग्यताएं निर्धारित की गई हैं:
 - ◆ **अध्यक्ष :** सार्वजनिक मामलों में अनुभव होना चाहिए।
 - ◆ **चार सदस्य :**
 - ◆ उच्च न्यायालय का न्यायाधीश या नियुक्ति के योग्य कोई व्यक्ति।
 - ◆ सरकारी वित्त और लेखा में विशेषज्ञता वाला व्यक्ति ।
 - ◆ वित्तीय प्रशासन में अनुभवी व्यक्ति ।
 - ◆ अर्थशास्त्र का विशिष्ट ज्ञान रखने वाला व्यक्ति ।
- अध्यक्ष और सदस्य राष्ट्रपति द्वारा निर्दिष्ट अवधि तक कार्य करते हैं और पुनर्नियुक्ति के पात्र होते हैं ।
- **वित्त आयोग के कार्य**
 - ◆ **कर वितरण :** यह विधेयक केंद्र और राज्यों के बीच तथा राज्यों के बीच कर आय के विभाजन की सिफारिश करता है।
 - ◆ **सहायता अनुदान :** केन्द्र से राज्य सरकारों को अनुदान के लिए सिद्धांतों का सुझाव देता है।
 - ◆ **स्थानीय निकायों के लिए संसाधन संवर्धन :** राज्य वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर पंचायतों और नगर पालिकाओं के संसाधनों को पूरक बनाने के तरीकों का प्रस्ताव करता है।
 - ◆ **अन्य वित्तीय मामले :** राष्ट्रपति द्वारा संदर्भित अतिरिक्त वित्तीय विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान करता है।
- **अनुशंसाओं के मुख्य पहलू**
 - ◆ **ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण :** राजकोषीय स्वायत्तता बढ़ाने के लिए केंद्रीय कर राजस्व में राज्यों की हिस्सेदारी निर्धारित करता है।
 - ◆ **क्षैतिज वितरण :** संतुलित विकास को समर्थन देने के लिए एक फार्मूले के आधार पर राज्यों के बीच समान आवंटन ।
 - ◆ **सहायता अनुदान :** सहायता या सुधार की आवश्यकता वाले विशिष्ट राज्यों या क्षेत्रों को लक्षित अनुदान, जैसे न्याय वितरण प्रणाली या सांख्यिकीय अवसंरचना सुधार।

वित्त आयोग की रिपोर्टें

- वित्त आयोग अपनी रिपोर्ट भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत करता है।
- यह रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों में प्रस्तुत की जाती है, तथा इसके साथ की गई कार्रवाई का विवरण देने वाला एक व्याख्यात्मक ज्ञापन भी संलग्न होता है।

भारत के अटॉर्नी जनरल और सॉलिसिटर जनरल

परिचय

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 76 में अटॉर्नी जनरल (एजी) के पद का प्रावधान है।
- वह देश के सर्वोच्च विधि अधिकारी हैं।

नियुक्ति एवं पात्रता

- राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त
- वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो सर्वोच्च न्यायालय (एससी) के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त होने के योग्य हो।
- वह भारत का नागरिक होना चाहिए।
- 5 वर्षों तक किसी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश या 10 वर्षों तक किसी उच्च न्यायालय का अधिवक्ता या राष्ट्रपति की राय में एक प्रतिष्ठित विधिवेत्ता होना चाहिए।
- राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित पारिश्रमिक प्राप्त करता है।
- **पदावधि:** संविधान द्वारा निर्धारित नहीं।
- **निष्कासन:** ए.जी. को हटाने की प्रक्रिया और आधार संविधान में नहीं बताए गए हैं। वह राष्ट्रपति की इच्छा पर्यन्त पद पर रहता है (राष्ट्रपति द्वारा किसी भी समय हटाया जा सकता है)।

कर्तव्य और कार्य:

- ऐसे कानूनी मामलों पर भारत सरकार को सलाह देना, जो राष्ट्रपति द्वारा उसे संदर्भित किए जाते हैं।
- राष्ट्रपति द्वारा उसे सौंपे गए विधिक स्वरूप के अन्य कर्तव्यों का पालन करना।
 - ◆ सर्वोच्च न्यायालय में सभी मामलों में या किसी भी उच्च न्यायालय में किसी भी मामले में, जिसमें भारत सरकार संबंधित हो, भारत सरकार की ओर से उपस्थित होना।
 - ◆ संविधान के अनुच्छेद 143 (सर्वोच्च न्यायालय से परामर्श करने की राष्ट्रपति की शक्ति) के अंतर्गत राष्ट्रपति द्वारा सर्वोच्च न्यायालय को भेजे गए किसी संदर्भ में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करना।
- संविधान या किसी अन्य कानून द्वारा उसे सौंपे गए कार्यों का निर्वहन करना।

अधिकार और सीमाएँ

- उसे संसद के दोनों सदनों या उनकी संयुक्त बैठक तथा संसद की किसी समिति, जिसका वह सदस्य नामित हो, की कार्यवाही में बोलने तथा भाग लेने का अधिकार है, परन्तु उसे वोट देने का अधिकार नहीं है।

- उसे संसद सदस्य को मिलने वाले सभी विशेषाधिकार और छूट प्राप्त हैं।
- वह सरकारी कर्मचारी की श्रेणी में नहीं आता है। उसे निजी कानूनी प्रैक्टिस से वंचित नहीं किया गया है।
- हालाँकि, उसे भारत सरकार के खिलाफ कोई सलाह या शिकायत नहीं करनी चाहिए।
- भारत के सॉलिसिटर जनरल और भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल, आधिकारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने में ए.जी. की सहायता करते हैं।
- **राज्यों में संबंधित कार्यालय:** एडवोकेट जनरल (अनुच्छेद 165)

संसद के सत्र



चर्चा में क्यों?

संसद का शीतकालीन सत्र आज से शुरू हो रहा है और 20 दिसंबर तक चलेगा, जिसमें कई विधेयकों पर चर्चा होगी, जिनमें वक्फ अधिनियम (संशोधन) विधेयक, मुसलमान वक्फ (निरसन) विधेयक और रेलवे तथा बैंकिंग कानून (संशोधन) विधेयक जैसे अन्य विधेयक शामिल हैं। 26 नवंबर को “संविधान दिवस” मनाने के लिए कोई बैठक नहीं होगी। इस बीच, इंडिया ब्लॉक के विपक्षी नेता सत्र के लिए अपनी रणनीति को अंतिम रूप देने के लिए सुबह 10 बजे बैठक करेंगे।

संसद के सत्रों के बारे में

- “भारतीय संसद का सत्र” वह अवधि है जब लोक सभा और राज्य सभा दोनों विधायी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए बुलाई जाती हैं।
- ये सत्र निर्वाचित प्रतिनिधियों को बहस करने, विचार-विमर्श करने और देश के शासन और प्रगति को प्रभावित करने वाले कानूनों को पारित करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।
- भारत में कोई निश्चित संसदीय कैलेंडर नहीं है।
- संविधान का अनुच्छेद 85 केवल यह प्रावधान करता है कि:
 - ◆ राष्ट्रपति समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन को ऐसे समय और स्थान पर अधिवेशन के लिए बुलाएगा, जिसे वह उचित समझे।
 - ◆ संसद के दो सत्रों के बीच अधिकतम अंतराल छह महीने से अधिक नहीं हो सकता। इसलिए, संसद को वर्ष में कम से कम दो बार मिलना चाहिए।
 - ◆ राष्ट्रपति समय-समय पर दोनों सदनों या किसी भी सदन का सत्रावसान कर सकता है तथा लोक सभा अर्थात् लोक सभा को भंग कर सकता है।
 - ◆ परम्परा के अनुसार, आमतौर पर एक वर्ष में भारतीय संसद के तीन सत्र होते हैं - बजट सत्र, मानसून सत्र और शीतकालीन सत्र।

भारतीय संसद के सत्रों के प्रकार

- **बजट सत्र:**
 - ◆ बजट सत्र संसद का सबसे लंबा और सबसे महत्वपूर्ण सत्र होता है।
 - ◆ बजट सत्र का प्राथमिक फोकस केंद्रीय बजट की प्रस्तुति, चर्चा और पारित करना है, जिसमें आगामी वित्तीय वर्ष के लिए सरकार की राजस्व और व्यय योजनाओं की रूपरेखा होती है।
 - ◆ हालाँकि, इस सत्र के दौरान अन्य विधायी कार्य और बहस भी होती हैं।
 - ◆ बजट सत्र सामान्यतः फरवरी से मई तक आयोजित किया जाता है।
- **मानसून सत्र:**
 - ◆ “मानसून सत्र” नाम इस तथ्य से निकला है कि यह भारत में मानसून के मौसम (मौसमी बारिश) के साथ मेल खाता है।
 - ◆ “मानसून सत्र” का प्राथमिक फोकस विधायी कार्य संचालित करना है, जिसमें विधेयकों को पारित करना, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा और सरकारी नीतियों की जांच शामिल है।
 - ◆ मानसून सत्र सामान्यतः जुलाई से सितम्बर तक आयोजित होता है।
- **शीतकालीन सत्र:**
 - ◆ मानसून सत्र के समान, शीतकालीन सत्र का प्राथमिक उद्देश्य विधायी कार्य निपटाना तथा अत्यावश्यक मामलों और विधेयकों को प्राथमिकता देना है।
 - ◆ शीतकालीन सत्र आमतौर पर नवंबर से दिसंबर तक आयोजित किया जाता है।
- **लेम डक सत्र**
 - ◆ ‘लेम डक सत्र’ से तात्पर्य नई लोकसभा के निर्वाचित होने के बाद पूर्ववर्ती लोकसभा के अंतिम सत्र से है।
 - ◆ पिछली लोकसभा के वे सदस्य जो नई लोकसभा में पुनः निर्वाचित नहीं हो सके, उन्हें ‘लेम डक’ कहा जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने प्रस्तावना में

‘समाजवादी’ और ‘धर्मनिरपेक्ष’ शब्दों की वैधता की पुष्टि की



चर्चा में क्यों?

सर्वोच्च न्यायालय ने प्रस्तावना में ‘समाजवादी’ और ‘धर्मनिरपेक्ष’ शब्दों को शामिल करने को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया, जिन्हें 1976 में 42वें संविधान संशोधन के माध्यम से जोड़ा गया था। 2020 में दायर की गई इन याचिकाओं में इन शब्दों की वैधता पर सवाल उठाए गए थे। सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के अनुरूप इन बदलावों को बरकरार रखा, जिसमें ‘अखंडता’ शब्द भी शामिल था।

सर्वोच्च न्यायालय की मुख्य टिप्पणियाँ:

- **संविधान का विकासशील स्वरूप:** 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों को जोड़ने से प्रस्तावना के मूल सार या अपनाने की तिथि (26 नवंबर, 1949) में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
 - ◆ अनुच्छेद 368 संसद को संविधान, जिसमें इसकी प्रस्तावना भी शामिल है, को संशोधित करने की शक्ति प्रदान करता है।
- **धर्मनिरपेक्षता:** राज्य तटस्थता बनाए रखता है, न तो किसी धर्म का पक्ष लेता है और न ही उसे दंडित करता है, जबकि विश्वास, व्यवहार और पेशे की स्वतंत्रता की रक्षा करता है।
- ◆ यह सिद्धांत अनुच्छेद 14, 15, 16 तथा अनुच्छेद 25, 26, 29 और 30 में निहित है।
- **समाजवाद:** अनुच्छेद 19(1)(जी) के तहत निजी व्यवसाय और व्यापार के अधिकार की रक्षा करते हुए आर्थिक और सामाजिक कल्याण के लक्ष्य को दर्शाता है।
- **शर्तों का समावेश:** न्यायालय ने स्पष्ट किया कि 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द जोड़ने से विधायी शक्तियाँ सीमित नहीं होंगी या संविधान का मूल ढांचा कमजोर नहीं होगा, बशर्ते कानून संवैधानिक सिद्धांतों का पालन करें।

संदर्भित ऐतिहासिक निर्णय:

- **केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य और एसआर बोम्मई बनाम भारत संघ :**
 - ◆ धर्मनिरपेक्षता को संविधान की मुख्य विशेषता के रूप में मान्यता दी गई।
- **आर.सी. पौड्याल बनाम भारत संघ :**
 - ◆ धर्मनिरपेक्षता को सभी धर्मों के प्रति समान और बिना किसी पक्षपात के व्यवहार करने की राज्य की प्रतिबद्धता के रूप में स्वीकार किया गया।
- **प्रॉपर्टी ओनर्स एसोसिएशन एवं अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य :**
 - ◆ फैसला सुनाया गया कि सरकार द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियाँ संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप होनी चाहिए तथा नागरिकों के प्रति जवाबदेह होनी चाहिए।

42वां संशोधन अधिनियम - लघु संविधान

- 1976 में इंदिरा गांधी सरकार द्वारा आपातकाल के दौरान अधिनियमित किया गया।
- इसमें किये गए व्यापक परिवर्तनों के कारण इसे "लघु संविधान" नाम दिया गया।
- इसका उद्देश्य केंद्र और संसद की शक्तियों का विस्तार करना तथा संवैधानिक संशोधनों को न्यायिक समीक्षा से बचाना है।

प्रमुख परिवर्तन

- **प्रस्तावना में संशोधन :** प्रस्तावना में 'समाजवादी', 'धर्मनिरपेक्ष' और 'अखंडता' शब्द जोड़े गए, जिससे भारत एक "संप्रभुता संपन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य" बन गया।
- **भाग IV (राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत) का विस्तार :** संसद को निर्देशक सिद्धांतों को लागू करने के लिए कानून बनाने का अधिकार दिया गया, जिससे समाजवादी ढांचे को मजबूती मिली।
- **अनुच्छेद 368 में परिवर्तन :** संशोधनों की समीक्षा करने की न्यायपालिका की शक्ति को प्रतिबंधित कर दिया गया, जिसमें कहा गया कि आगे के निर्देशक सिद्धांतों में किए गए संशोधनों पर अदालतों में सवाल नहीं उठाया जा सकता।
- **मौलिक कर्तव्य अनुच्छेद 51ए:** भाग IV-ए के अंतर्गत नागरिकों के लिए विस्तारित मौलिक कर्तव्य।
- आपातकालीन प्रावधानों और संघीय ढांचे से संबंधित कानूनों को संशोधित करके राज्यों पर केंद्र की शक्ति को मजबूत किया गया।
- **न्यायिक कटौती:** अनुच्छेद 31सी में संशोधन करके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करने वाले कानूनों को रद्द करने की न्यायपालिका की क्षमता को सीमित कर दिया गया।
 - ◆ मौलिक अधिकारों और शक्तियों पर प्रभाव
- **न्यायिक प्रतिक्रियाएँ और उलटफेर:**
 - ◆ **मिनर्वा मिल्स बनाम भारत संघ (1980) :** सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक समीक्षा को सीमित करने वाले तथा संसद को अनियंत्रित शक्तियाँ देने वाले प्रावधानों को निरस्त कर दिया।
 - ◆ **43वां और 44वां संशोधन :** कई प्रावधानों को उलट दिया गया, मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक सिद्धांतों के बीच संतुलन बहाल किया गया। हालाँकि, प्रस्तावना में संशोधन बरकरार रहे।



इंडोनेशिया के माउंट लेवोटोबी लाकी- लाकी में ज्वालामुखी विस्फोट



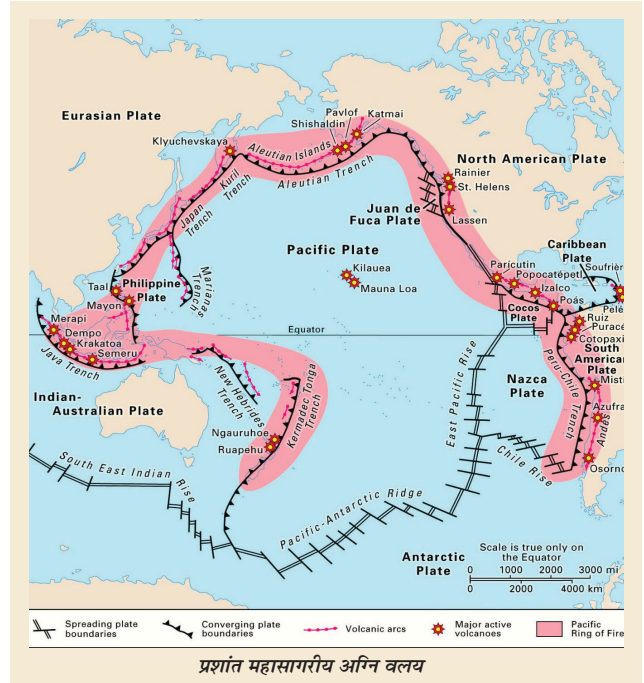
चर्चा में क्यों ?

इंडोनेशिया के फ्लोरेस द्वीप पर माउंट लेवोटोबी लाकी-लाकी में विस्फोट हुआ, जिसमें कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और एक कॉन्वेंट सहित कई घर नष्ट हो गए। विस्फोट के कारण ज्वालामुखी का मलबा 6 किलोमीटर तक फैल गया, जिससे कई गांवों के 10,000 निवासी प्रभावित हुए। अधिकारियों ने अलर्ट स्तर को उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया है, क्योंकि बचाव दल चल रही भूकंपीय गतिविधि के बीच और अधिक पीड़ितों की तलाश कर रहे हैं। इंडोनेशिया में इस तरह के ज्वालामुखी विस्फोट होना असामान्य नहीं है, क्योंकि यह प्रशांत क्षेत्र में प्रसिद्ध 'रिंग ऑफ फायर' के साथ स्थित है।

प्रशांत महासागरीय अग्नि वलय

- रिंग ऑफ फायर, जिसे परि-प्रशांत बेल्ट भी कहा जाता है, प्रशांत महासागर के किनारे एक मार्ग है जो सक्रिय ज्वालामुखियों और लगातार आने वाले भूकंपों से चिह्नित है।
- पृथ्वी के अधिकांश ज्वालामुखी विस्फोट और भूकंप अग्नि वलय के आसपास होते हैं।
- यह लगभग 40,000 किलोमीटर (24,900 मील) तक फैला हुआ है तथा प्रशांत, जुआन डे फूका, कोकोस, भारतीय ऑस्ट्रेलियाई, नाज़का, उत्तरी अमेरिकी और फिलीपीन प्लेटों सहित कई टेक्टोनिक प्लेटों के बीच की सीमाओं का पता लगाता है।
- **अग्नि वलय और देश:** बोलीविया, चिली, इक्वाडोर, पेरू, कोस्टा रिका, ग्वाटेमाला, मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, रूस, जापान, फिलीपींस, ऑस्ट्रेलिया, पापुआ न्यू गिनी, इंडोनेशिया, न्यूजीलैंड और अंटार्कटिका
- यह 450 से अधिक सक्रिय और निष्क्रिय ज्वालामुखियों (पृथ्वी के कुल ज्वालामुखियों का 75%) का घर है, जो प्रशांत महासागर के चारों ओर अर्धवृत्त या घड़े की नाल के आकार का निर्माण करते हैं।
- इंडोनेशिया का माउंट टैम्बोरा ज्वालामुखी, जो 1815 में फटा था, इतिहास में सबसे बड़ा ज्वालामुखी विस्फोट था।

- यह इतिहास में आए सबसे विनाशकारी भूकंपों का स्थल रहा है, जिसमें 1960 और 2010 का चिली भूकंप, 1964 का अलास्का भूकंप, 2011 का जापान भूकंप, तथा 2004 का हिंद महासागर में आया विनाशकारी सुनामी भूकंप शामिल है।



प्रशांत महासागरीय अग्नि वलय

फेंगल तूफान



चर्चा में क्यों ?

भारतीय मौसम विभाग (IMD) ने चक्रवात फेंगल में गहरे दबाव के बढ़ने का पूर्वानुमान लगाया है, जो अगले दो दिनों में तमिलनाडु को प्रभावित करेगा। यह चक्रवात दाना के बाद मानसून के बाद का दूसरा चक्रवात होगा। सऊदी अरब द्वारा फेंगल नाम दिया गया यह तूफान भारी से बहुत भारी बारिश लेकर आ सकता है, जिसके चलते बुधवार को तमिलनाडु के लिए रेड अलर्ट और 28 नवंबर 2024 को ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

चक्रवात क्या हैं ?

चक्रवात हिंसक गोलाकार तूफान होते हैं, जिनकी विशेषता कम दबाव वाले केंद्र और तेज गति वाली हवाएँ होती हैं, जो गर्म उष्णकटिबंधीय महासागरों से उत्पन्न होते हैं। ये तूफान विनाशकारी हवाएँ (झंझावात), भारी वर्षा (मूसलाधार) और तूफानी लहरें लाते हैं, जिससे बड़े पैमाने पर तबाही होती है, खासकर तटीय क्षेत्रों में।

● प्रमुख विशेषताएँ:

- ◆ **परिसंचरण:** कोरियोलिस प्रभाव के कारण चक्रवाती हवाएँ उत्तरी गोलार्ध में वामावर्त और दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिणावर्त घूमती हैं।
- ◆ **संरचना:** चक्रवातों के केंद्र में एक “आंख” होती है, जो तीव्र हवाओं और वर्षा की “आंख की दीवार” से घिरी होती है, तथा बाहर की ओर सर्पिल वर्षा बैंड होते हैं।
- ◆ **आकार और पथ:** आकार में कॉम्पैक्ट (केंद्र के पास 80-300 किमी) लेकिन 1500 किमी तक विस्तारित हो सकते हैं। वे पृथ्वी के घूर्णन, पूर्वी और पश्चिमी हवाओं से प्रभावित एक परवलयिक पथ का अनुसरण करते हैं।

● चक्रवात के प्रकार:

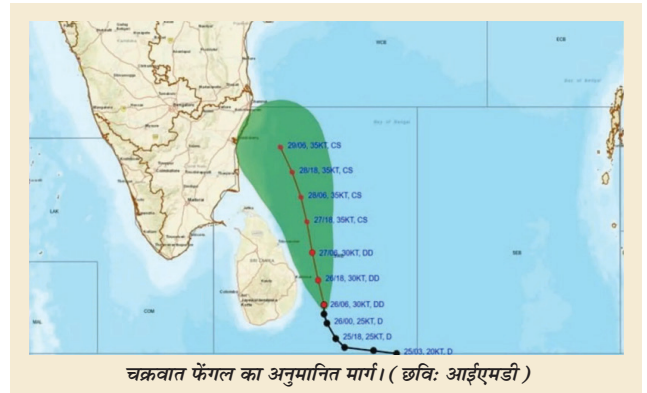
- ◆ **उष्णकटिबंधीय चक्रवात:** ये गर्म महासागरों के ऊपर गर्मी और नमी के कारण बनते हैं।

- ◆ **उष्ण कटिबंधीय चक्रवात:** मध्य अक्षांश क्षेत्रों में विकसित होते हैं तथा ठंडे और गर्म फ्रंट्स से जुड़े होते हैं।

● चक्रवात निर्माण के लिए शर्तें:

- ◆ महासागर सतह का तापमान $>27^{\circ}\text{C}$.
- ◆ उच्च आर्द्रता एवं गुप्त ऊष्मा की उपलब्धता।
- ◆ कमजोर ऊर्ध्वाधर पवन
- ◆ पहले से मौजूद निम्न-दाब क्षेत्र और कोरिओलिस बल ($> 5^{\circ}$ अक्षांश)।

चक्रवात तब नष्ट हो जाते हैं जब वे ठंडे पानी, बड़ी हुई हवा के झोंके या ज़मीन पर आते हैं, जिससे उनकी नमी की आपूर्ति बंद हो जाती है। उन्नत निगरानी प्रणाली और प्रारंभिक चेतावनियाँ उनके प्रभाव को कम करने में मदद करती हैं।



COP29 अज़रबैजान के बाकू में शुरू हुआ



चर्चा में क्यों ?

संयुक्त राष्ट्र का 29वां जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP29) बाकू, अज़रबैजान में शुरू हुआ। इस वर्ष के शिखर सम्मेलन को 'वित्त COP' कहा जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य जलवायु प्रभावों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील देशों की सहायता के लिए नए वैश्विक जलवायु वित्त लक्ष्य को आगे बढ़ाना है। भारत और अन्य ग्लोबल साउथ देश वित्तीय और तकनीकी संसाधनों तक बेहतर पहुंच की मांग कर रहे हैं, जो जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने और अग्रिम पंक्ति के समुदायों की रक्षा के लिए आवश्यक हैं।

COP29 के बारे में

- **स्थान:** बाकू स्टेडियम, बाकू, अज़रबैजान
- **मेज़बान:** अज़रबैजान सरकार
- **सम्मेलन की तिथियाँ:** 11 नवंबर 2024 (सोमवार) से 22 नवंबर 2024 (शुक्रवार)।
- **बैठक में शामिल :** पार्टियों का सम्मेलन (सीओपी 29) और पार्टियों का सम्मेलन जो क्योटो प्रोटोकॉल के पक्षों की बैठक के रूप में कार्य करेगा (सीएमपी 19)।

विवरण

- **COP :** यह जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) का प्राथमिक शासी निकाय है।
- **यूएनएफसीसीसी :**
 - ◆ वैश्विक जलवायु वार्ता के लिए रूपरेखा प्रदान करने हेतु 1992 में एक अंतराष्ट्रीय संधि स्थापित की गई थी।
 - ◆ उद्देश्य: मानव-जनित जलवायु हस्तक्षेप को रोकने के लिए ग्रीनहाउस गैस सांद्रता को सुरक्षित स्तर पर स्थिर करना।
 - ◆ यूएनएफसीसीसी के पक्षकार ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और जलवायु लचीलापन बढ़ाने के माध्यम से जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए सामूहिक कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध हैं।

सदस्यता :

- ◆ वर्तमान में, यूएनएफसीसीसी में 198 पक्ष हैं, जिनमें 197 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं।
- ◆ यह यूएनएफसीसीसी में लगभग सार्वभौमिक भागीदारी का प्रतिनिधित्व करता है, तथा जलवायु कार्रवाई के प्रति व्यापक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

- **सीओपी का लक्ष्य :** प्रत्येक सीओपी सत्र जलवायु नीति पर वैश्विक चर्चा और निर्णय की सुविधा प्रदान करता है, जिसमें वित्तीय प्रतिबद्धताएं, उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अनुकूलन रणनीतियां शामिल हैं।

अंतराष्ट्रीय सौर गठबंधन

(आईएसए) का 7 वां सत्र



चर्चा में क्यों ?

भारत को सातवें ISA असेंबली के दौरान अंतराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) के अध्यक्ष के रूप में फिर से चुना गया है, जिसने वैश्विक सौर ऊर्जा प्रयासों में अपनी अग्रणी भूमिका की पुष्टि की है। नई दिल्ली में आयोजित इस सत्र में 120 देशों की भागीदारी के साथ कृषि-वोल्टेइक खेती, ऊर्जा पहुंच और स्थिरता पर जोर दिया गया। प्रतिनिधियों ने कृषि के साथ सौर ऊर्जा उत्पादन को जोड़ने में भारत के नवाचार पर प्रकाश डाला।

कृषिवोल्टेइक खेती

- यह कृषि को सौर ऊर्जा उत्पादन के साथ जोड़ने वाला एक अभिनव दृष्टिकोण है।
- इस पद्धति में फसलों के ऊपर सौर पैनल लगाए जाते हैं, जिससे भूमि का उपयोग खेती और ऊर्जा उत्पादन दोनों के लिए किया जा सकता है।
- यह भूमि की उत्पादकता को अधिकतम करने में मदद करता है, कुछ फसलों के लिए छाया प्रदान करता है और मिट्टी की नमी की हानि को कम करता है।

- यह प्रणाली स्थायी ऊर्जा संक्रमण का समर्थन करती है, साथ ही कृषि लचीलापन और उत्पादकता को बढ़ाती है, विशेष रूप से सीमित कृषि योग्य भूमि वाले क्षेत्रों में।



देश का 56 वां टाइगर रिजर्व छत्तीसगढ़ में अधिसूचित



चर्चा में क्यों ?

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला को भारत का 56 वां बाघ अभयारण्य घोषित किया। 2,829 वर्ग किलोमीटर में फैला यह नया अभयारण्य भारत के बाघ संरक्षण प्रयासों में एक और मील का पत्थर साबित होगा, जो वन्यजीवों और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुरु घासीदास - तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व के बारे में

- **स्थान**
 - ◆ छत्तीसगढ़ में मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, कोरिया, सूरजपुर और बलरामपुर जिलों में फैला हुआ है।
 - ◆ छोटा नागपुर पठार का कुछ भाग तथा बघेलखण्ड पठार का कुछ भाग।
- **क्षेत्र**
 - ◆ कुल: 2,829.38 वर्ग किमी.
 - ◆ मुख्य/महत्वपूर्ण पर्यावास: 2,049.2 वर्ग कि.मी. (गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान और तमोर पिंगला वन्यजीव अभयारण्य)।
 - ◆ विशेष क्षेत्र: 780.15 वर्ग किमी.
- **आकार के अनुसार रैंकिंग:** भारत में तीसरा सबसे बड़ा बाघ रिजर्व।
- **कनेक्टिविटी**
 - ◆ संजय दुबरी टाइगर रिजर्व (मध्य प्रदेश) से सटा हुआ, लगभग 4,500 वर्ग किमी का भूदृश्य परिसर बनाता है।
 - ◆ पश्चिम में बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व (मध्य प्रदेश) और पूर्व में पलामू टाइगर रिजर्व (झारखंड) से जुड़ा हुआ है।
- **जीव-जंतु**
 - ◆ कुल प्रलेखित प्रजातियाँ: 753 (365 अकशेरुकी, 388 कशेरुकी).
 - ◆ अकशेरुकी: मुख्यतः कीट।
 - ◆ कशेरुकी: 230 पक्षी प्रजातियाँ, 55 स्तनपायी प्रजातियाँ (कई संकटग्रस्त प्रजातियाँ शामिल हैं)।
- **संरक्षण महत्त्व:**
 - ◆ अक्टूबर 2021 में राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) द्वारा भारत के 56वें टाइगर रिजर्व के रूप में मान्यता दी गई।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए)

- **स्थापना:** 2015
- **मुख्यालय:** गुरुग्राम
- **महानिदेशक:** आशीष खन्ना
- यह सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के बढ़ते उपयोग के लिए एक कार्य-उन्मुख, सदस्य-संचालित, सहयोगात्मक मंच है।
- इसका मूल उद्देश्य अपने सदस्य देशों में ऊर्जा तक पहुंच को सुगम बनाना, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना और ऊर्जा परिवर्तन को बढ़ावा देना है।
- इसकी परिकल्पना भारत और फ्रांस द्वारा सौर ऊर्जा समाधानों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध प्रयासों को गति देने के लिए एक संयुक्त प्रयास के रूप में की गई थी।
- वर्तमान में इसमें 120 से अधिक सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता देश शामिल हैं।
- **महत्वपूर्ण परियोजनाएँ**
 - ◆ एक सूर्य एक विश्व एक ग्रिड (OSOWOG)
 - ◆ आईएसए सौर प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग संसाधन केंद्र (आईएसटीएआर सी)
 - ◆ भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) योजना

- ◆ छत्तीसगढ़ में चौथा बाघ अभयारण्य, प्रोजेक्ट टाइगर के तहत संरक्षण प्रयासों को बढ़ाया गया।
- **पारिस्थितिकीय विशेषताएँ:** घने जंगलों, नदियों और झरनों के साथ विविध भूभाग, महत्वपूर्ण बाघ आवासों का निर्माण और समृद्ध जीव विविधता को बढ़ावा देना।

बाघ अभयारण्य

- बाघ अभयारण्यों का प्रबंधन प्रोजेक्ट टाइगर (1973) द्वारा किया जाता है।
- यह एक संरक्षित क्षेत्र है जिसे बड़े धारीदार बिल्लियों के संरक्षण के लिए वैधानिक रूप से नामित किया गया है और इसे टाइगर रिजर्व के रूप में जाना जाता है।
- हालाँकि, बाघ अभयारण्य एक राष्ट्रीय उद्यान या वन्यजीव अभयारण्य भी हो सकता है।
 - ◆ जैसे कि सरिस्का टाइगर रिजर्व भी एक राष्ट्रीय उद्यान है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस जगह को मूल रूप से एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में बनाया गया था और बाद में इसे बाघ संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया गया।

प्रोजेक्ट टाइगर

- यह पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की एक केन्द्र प्रायोजित योजना है।
- इसका प्रशासन राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण द्वारा किया जाता है।
- बाघ अभयारण्यों का गठन 'कोर-बफर रणनीति' के आधार पर किया गया है।
- **कोर जोन**
 - ◆ मुख्य क्षेत्र को जैविक गड़बड़ी और वानिकी कार्यों से मुक्त रखा जाता है, जहाँ लघु वन उपज का संग्रह, चराई, मानवीय गड़बड़ी की अनुमति नहीं है।
 - ◆ इन क्षेत्रों को अनुसूचित जनजातियों या अन्य वनवासियों के अधिकारों को प्रभावित किए बिना, बाघ संरक्षण के प्रयोजन के लिए रखा जाना आवश्यक है।
 - ◆ अधिसूचित: इन क्षेत्रों को राज्य सरकार द्वारा एक विशेषज्ञ समिति (उसी उद्देश्य के लिए गठित) के परामर्श से अधिसूचित किया जाता है।
- **मध्यवर्ती क्षेत्र**
 - ◆ इसे महत्वपूर्ण बाघ आवास या कोर क्षेत्र के परिधीय क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है, जो मानव गतिविधि (आदिवासियों) के सह-अस्तित्व के लिए गुंजाइश प्रदान करने के अलावा, फैले हुए बाघों के लिए पूरक आवास प्रदान करता है।
 - ◆ **बफर जोन की सीमाएं:** ऐसे क्षेत्रों की सीमाएं संबंधित ग्राम सभा और इस प्रयोजन के लिए गठित एक विशेषज्ञ समिति द्वारा निर्धारित की जाती हैं।



भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन



चर्चा में क्यों ?

भारत का केंद्रीय बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI), चीनी युआन के अवमूल्यन के जवाब में रुपये को धीरे-धीरे कमजोर होने देने के लिए तैयार है। डोनाल्ड ट्रम्प की हाल ही में अमेरिकी चुनाव में जीत के बाद चीनी वस्तुओं पर संभावित नए टैरिफ को लेकर चिंताएँ पैदा हुई हैं, जिससे भारत के लिए नरम युआन और बढ़े हुए व्यापार असंतुलन की उम्मीदें बढ़ गई हैं। इस प्रकार नीति निर्माता चीनी वस्तुओं के मुकाबले भारतीय निर्यात को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए रुपये के मूल्य को कम करने के लिए तैयार हैं।

समाचार पर अधिक जानकारी

- ट्रम्प के सत्ता में वापस आने से चीनी वस्तुओं पर अमेरिका द्वारा भारी टैरिफ लगाए जाने की आशंकाएं बढ़ गई हैं।
 - ◆ इससे युआन कमजोर होगा और भारत में सस्ते चीनी आयात में संभावित रूप से वृद्धि होगी।
 - ◆ इससे चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा और बढ़ सकता है (2023 में 83 बिलियन डॉलर)।
- ऐतिहासिक संदर्भ : ट्रम्प के पिछले कार्यकाल के दौरान, टैरिफ बढ़ोतरी के कारण 2018-19 में युआन में 11.5% की गिरावट आई, जबकि इसी अवधि में रुपये में 11.2% की गिरावट आई, जिससे टैरिफ का प्रभाव आंशिक रूप से कम हो गया।
- आरबीआई की रणनीति
 - ◆ भारतीय रिजर्व बैंक रुपये में नियंत्रित अवमूल्यन की अनुमति देगा, तथा तीव्र गिरावट को रोकने के लिए अपने पर्याप्त विदेशी भंडार (680 बिलियन डॉलर से अधिक) का उपयोग करेगा, जिसका उद्देश्य संतुलित तथा प्रतिस्पर्धी मुद्रा बनाना है।
- एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज के अनुसार , आरबीआई ने युआन के मुकाबले रुपये को सुक्ष्मता से स्थिर रखा है।
 - ◆ चीन के साथ भारी व्यापार घाटे के बीच विनिमय दर को प्रबंधित करने का लक्ष्य है तथा ऐसी अस्थिर स्थिति में रुपये को स्वतंत्र रूप से तैरने नहीं दिया जाएगा।

- ◆ भारत का लक्ष्य वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में चीन का विकल्प तलाशने वाली कंपनियों को आकर्षित करके अपने विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत करना है
- ◆ इस रणनीति के लिए प्रतिस्पर्धी रुपया अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर इसलिए क्योंकि भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य क्षेत्रों में निर्यात बाजार में हिस्सेदारी हासिल करना शुरू कर रहा है।

अवमूल्यन और मूल्यहास के बीच अंतर

● अवमूल्यन :

- ◆ यह किसी देश की सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा अन्य मुद्राओं की तुलना में अपनी मुद्रा के मूल्य को कम करने की जानबूझकर की गई कार्रवाई है।
- ◆ मुख्यतः यह निश्चित या निर्धारित विनिमय दर प्रणालियों में होता है , जहां मुद्रा का मूल्य सरकार द्वारा निर्धारित किया जाता है।
- ◆ इसका उपयोग निर्यात को सस्ता और आयात को महंगा बनाने के लिए किया जाता है, जिससे व्यापार संतुलन में सुधार होता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।
- ◆ उदाहरण: कोई देश अपने माल को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए अपनी मुद्रा का अवमूल्यन कर सकता है।

● मूल्यहास:

- ◆ यह आपूर्ति और मांग, ब्याज दर के अंतर या आर्थिक संकेतकों जैसी बाजार शक्तियों के कारण मुद्रा के मूल्य में होने वाली स्वाभाविक गिरावट है।
- ◆ यह अस्थिर या लचीली विनिमय दर प्रणालियों में होता है जहां मुद्रा का मूल्य बाजार द्वारा निर्धारित होता है।
- ◆ यह भू-राजनीतिक घटनाओं, व्यापार असंतुलन या मौद्रिक नीति जैसे बाह्य कारकों से प्रभावित हो सकता है, लेकिन यह प्रत्यक्ष सरकारी हस्तक्षेप का परिणाम नहीं है।
- ◆ उदाहरण: यदि आर्थिक परिस्थितियों के कारण किसी मुद्रा की मांग कम हो जाती है, तो अन्य मुद्राओं की तुलना में उसका मूल्य कम हो जाता है।

आरबीआई ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में पुनर्वर्गीकृत करने के लिए परिचालन ढांचा जारी किया



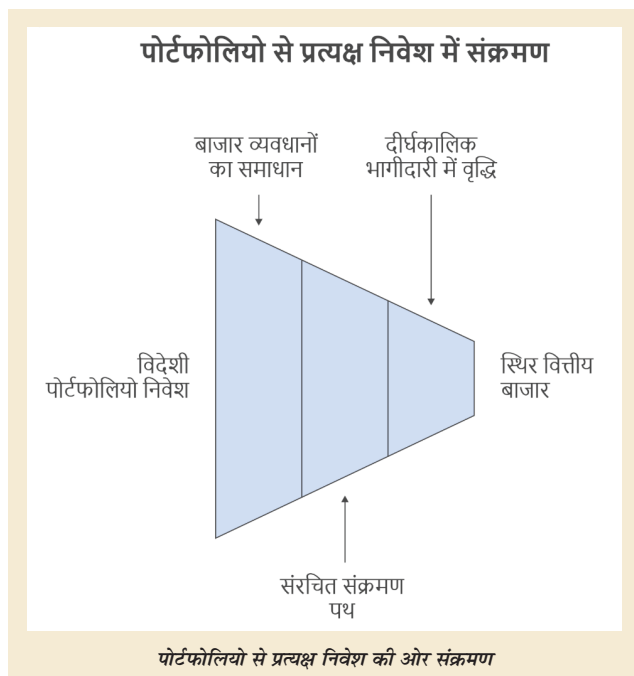
चर्चा में क्यों ?

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPI) द्वारा किए गए निवेश को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में पुनर्वर्गीकृत करने के लिए एक विस्तृत परिचालन रूपरेखा जारी की है, उन मामलों में जहाँ निर्धारित निवेश सीमा का उल्लंघन किया गया है। इस कदम का उद्देश्य प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना और भारत में विदेशी निवेश को नियंत्रित करने वाले विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना है। भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) ने भी इस पुनर्वर्गीकरण की प्रक्रिया को रेखांकित करते हुए एक परिपत्र जारी किया है।

नये फ्रेमवर्क की मुख्य विशेषताएं:

- **एफपीआई के लिए निवेश सीमा:**
 - ◆ विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) को किसी कंपनी की कुल चुकता इक्विटी पूंजी का 10% से अधिक, पूर्णतया तनुकृत आधार पर, रखने की अनुमति नहीं है।
 - ◆ यह सीमा भारतीय कंपनियों में एफपीआई के अत्यधिक प्रभाव को रोकने के लिए लागू की गई है।
- यदि कोई एफपीआई 10% की सीमा का उल्लंघन करता है, तो उसके पास दो विकल्प हैं:
 - ◆ निर्धारित निवेश सीमा के अनुपालन हेतु अपनी हिस्सेदारी बेचनी होगी।
 - ◆ आरबीआई और सेबी द्वारा निर्धारित शर्तों के अधीन, अपनी होल्डिंग्स को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के रूप में पुनर्वर्गीकृत करें।

- **पुनर्वर्गीकरण समयसीमा:** उल्लंघन के मामले में, एफपीआई को उल्लंघन का कारण बनने वाले ट्रेडों के निपटान की तारीख से पांच कारोबारी दिनों के भीतर कार्रवाई करनी चाहिए। एफपीआई इस समयसीमा के भीतर या तो विनिवेश कर सकता है या एफडीआई के रूप में अपने निवेश का पुनर्वर्गीकरण कर सकता है।
- **आरबीआई और सेबी विनियम:**
 - ◆ पुनर्वर्गीकरण प्रक्रिया आरबीआई द्वारा जारी परिचालन ढांचे द्वारा संचालित होती है, जिसमें सेबी द्वारा अतिरिक्त प्रक्रियाएं निर्धारित की जाती हैं।
 - ◆ संबंधित एफपीआई को पुनर्वर्गीकरण के लिए भारत सरकार से आवश्यक अनुमोदन तथा निवेशित कंपनी की सहमति प्राप्त करनी होगी।
- **फ्रेमवर्क का प्रभाव:**



- **एफडीआई और एफपीआई के बीच अंतर**

आयाम	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई)	विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई)
भागीदारी	इसमें दीर्घकालिक हित के साथ स्वामित्व, नियंत्रण और प्रबंधन में सक्रिय भागीदारी शामिल है	प्रबंधन में कोई सक्रिय भागीदारी नहीं। निवेश उपकरण आसानी से व्यापार योग्य होते हैं और नियंत्रित हिस्सेदारी का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं
रूप	यह तब होता है जब कोई कंपनी किसी अन्य देश में उत्पादन या सुविधाएं स्थापित करने के लिए निवेश करती है	ऐसा तब होता है जब कोई विदेशी संस्था शेयर बाजारों के माध्यम से किसी कंपनी में इक्विटी खरीदती है

Contd...

आयाम	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई)	विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई)
भागीदारी	इसमें दीर्घकालिक हित के साथ स्वामित्व, नियंत्रण और प्रबंधन में सक्रिय भागीदारी शामिल है	प्रबंधन में कोई सक्रिय भागीदारी नहीं। निवेश उपकरण आसानी से व्यापार योग्य होते हैं और नियंत्रित हिस्सेदारी का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं
नियंत्रण की डिग्री	कंपनी में नियंत्रण की एक डिग्री प्रदान करता है	कंपनी पर कोई नियंत्रण नहीं
सीमा	10% से अधिक निवेश को एफडीआई माना जाता है	चुकता पूंजी का 10% तक निवेश करने की अनुमति
बेचना/बाहर निकालना	बेचना या निकालना कठिन; दीर्घकालिक प्रतिबद्धता	निवेश को बेचना या निकालना आसान है क्योंकि वे तरल हैं
कहां से आता है	मुख्य रूप से बहुराष्ट्रीय संगठनों द्वारा किया गया	पेंशन फंड, म्यूचुअल फंड या व्यक्तिगत निवेशकों जैसे विविध स्रोतों से आ सकता है
बाजार का प्रकार	प्राथमिक बाजार में प्रवाह	द्वितीयक बाजार में प्रवाह (जैसे, स्टॉक एक्सचेंज)
कार्यकाल	दीर्घकालिक निवेश	अल्पावधि निवेश
क्या निवेशित / स्थानांतरित किया गया है	इसमें वित्तीय और गैर-वित्तीय परिसंपत्तियाँ जैसे प्रौद्योगिकी और बौद्धिक संपदा शामिल हैं	केवल वित्तीय परिसंपत्तियाँ जैसे स्टॉक या बांड
उद्देश्य	दीर्घकालिक विकास के लिए विशिष्ट उद्यमों को लक्ष्य बनाना	सामान्य रूप से पूंजी की उपलब्धता बढ़ जाती है
अस्थिरता	अधिक स्थिर माना जाता है	कम स्थिर माना जाता है, बाजार में उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है
योगदान	आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकी और रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान देता है	मुख्य रूप से पूंजी प्रवाह के माध्यम से योगदान, आर्थिक विकास पर कम प्रभाव



भारत का पहला एनालॉग अंतरिक्ष मिशन: चंद्र अन्वेषण की दिशा में एक एक महत्वपूर्ण कदम



चर्चा में क्यों ?

भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष कार्यक्रम ने लेह, लद्दाख में अपने पहले एनालॉग अंतरिक्ष मिशन के प्रक्षेपण के साथ एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस अभूतपूर्व पहल का उद्देश्य अंतरग्रहीय मिशनों, विशेष रूप से चंद्रमा और मंगल के मिशनों की स्थितियों का अनुकरण करना है।

मिशन के बारे में

- **एनालॉग अंतरिक्ष मिशन:** पृथ्वी पर एक नकली अंतरिक्ष मिशन।
- **लक्ष्य:** अंतरग्रहीय मिशनों, विशेषकर चंद्रमा और मंगल ग्रह के मिशनों की चुनौतियों और स्थितियों को दोहराना।
- **स्थान:** लेह, लद्दाख, भारत।

इसरो के बारे में

- यह भारत की राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी है।
- **स्थापना:** 15 अगस्त 1969, अंतरिक्ष विभाग के अधीन।
- **मुख्यालय:** बेंगलुरु, कर्नाटक।
- **वर्तमान अध्यक्ष:** एस. सोमनाथ
- **प्रमुख अंतरिक्ष मिशन:**
 - ◆ **चन्द्रयान मिशन:** भारत का चन्द्र अन्वेषण कार्यक्रम।
 - ◆ **मंगलयान:** भारत का मंगल ऑर्बिटर मिशन।
 - ◆ **GSAT उपग्रह:** संचार उपग्रह।
 - ◆ **आईआरएनएसएस:** भारतीय क्षेत्रीय नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम।
 - ◆ **RISAT उपग्रह:** रडार इमेजिंग उपग्रह।
 - ◆ **गगनयान:** भारत का मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम।



- **अवधि:** एक माह।
- **आवास:** एक कॉम्पैक्ट, फुलाने योग्य आवास जिसका नाम हब-1 है।
- **उद्देश्य:**
 - ◆ चरम स्थितियों में जीवन-सहायक प्रणालियों का परीक्षण करें।
 - ◆ मानव मनोविज्ञान और शरीरक्रिया विज्ञान का पृथक अध्ययन करें।
 - ◆ लंबी अवधि के अंतरिक्ष मिशनों के लिए रणनीति विकसित करना।

भारत का एयरोस्पेस क्षेत्र में उदय: पहला भारत निर्मित C295 विमान क्षितिज पर



चर्चा में क्यों ?

गुजरात के वडोदरा में टाटा एयरबस C295 विनिर्माण सुविधा के उद्घाटन के साथ भारत ने अपने एयरोस्पेस उद्योग में एक महत्वपूर्ण छलांग लगाई है। यह अत्याधुनिक सुविधा रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता की दिशा में भारत की यात्रा में एक प्रमुख मील का पत्थर है।

C295 परियोजना के बारे में

- विमान के 85% से अधिक कलपुर्जे घरेलू स्तर पर निर्मित किये जायेंगे, जिससे रक्षा उत्पादन में भारत की आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।
- इस परियोजना से लगभग 10,000 नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है, जिससे आर्थिक विकास और कौशल विकास में योगदान मिलेगा।
- एयरबस और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स के बीच सहयोग भारत और स्पेन के बीच रणनीतिक साझेदारी का प्रतीक है।
- प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के प्रति स्पेन की प्रतिबद्धता से भारत की एयरोस्पेस क्षमताएं बढ़ेंगी और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

- इस परियोजना का भारत के एमएसएमई पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा, जिससे स्थानीय व्यवसायों के लिए अवसर पैदा होंगे।
- सी295 परियोजना एयरोस्पेस क्षेत्र में भारत की बढ़ती ताकत का प्रमाण है।
- यह 'मेक इन इंडिया' के विजन को साकार करने तथा भारत को वैश्विक एयरोस्पेस विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

C295 विमान के बारे में

- यह एक बहुमुखी सैन्य परिवहन विमान है जिसे आधुनिक वायु सेनाओं की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह अपनी विश्वसनीयता, दक्षता और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में काम करने की क्षमता के लिए जाना जाता है।

● भूमिकाएं और क्षमताएं:

- ◆ सैन्य परिवहन
- ◆ चिकित्सा निकासी
- ◆ कार्गो डिलीवरी
- ◆ खोज और बचाव
- ◆ विशेष संचालन



C295 विमान

● तकनीकी निर्देश:

- ◆ क्षमता: 5 से 10 टन
- ◆ अधिकतम गति: 480 किमी प्रति घंटा
- ◆ केबिन का आयाम: 12.7 मीटर (41 फीट और 8 इंच)
- ◆ बैठने की क्षमता: 71 सीटें
- ◆ रियर रैंप डोर: सैनिकों और कार्गो की त्वरित प्रतिक्रिया और पैरा-ड्रॉपिंग के लिए
- ◆ कम दूरी पर टेकऑफ़ और लैंडिंग (STOL) क्षमताएं: अर्ध-सुसज्जित सतहों से संचालन में सक्षम बनाती हैं।

- C295 कई प्रकार के मिशनों के लिए उपयुक्त है, जिनमें शामिल हैं:

- ◆ सैन्य परिवहन
- ◆ चिकित्सा निकासी
- ◆ कार्गो डिलीवरी
- ◆ खोज और बचाव
- ◆ समुद्री गश्त

दुनिया का पहला लकड़ी का उपग्रह, लिग्नोसैट

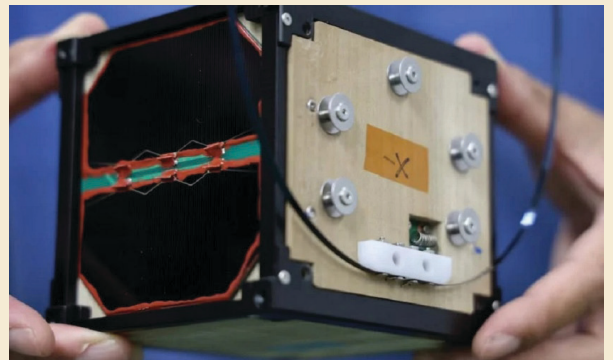


चर्चा में क्यों?

दुनिया का पहला लकड़ी का उपग्रह लिग्नोसैट, 5 नवंबर, 2024 को फ्लोरिडा में नासा के कैंनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स रॉकेट पर लॉन्च किया गया था, जिसमें जापान की क्योटो यूनिवर्सिटी और जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA) इस परियोजना की देखरेख कर रही थी। सुमितोमो फ़ॉरैस्ट्री के सहयोग से क्योटो यूनिवर्सिटी द्वारा विकसित इस उपग्रह का उद्देश्य भविष्य के अंतरिक्ष आवास और संरचनाओं के लिए सामग्री के रूप में लकड़ी की क्षमता का पता लगाना है।

उपग्रह के बारे में

- इस परियोजना का नेतृत्व क्योटो विश्वविद्यालय और जापान की अंतरिक्ष एजेंसी JAXA ने किया।
- इसका उद्देश्य अंतरिक्ष में लकड़ी के स्थायित्व का परीक्षण करना है, जिसका अंतिम लक्ष्य उपग्रह निर्माण में धातु के पर्यावरण अनुकूल विकल्प के रूप में लकड़ी की खोज करके अंतरिक्ष में कचरे को कम करना है।
- मैग्नेलिया लकड़ी से निर्मित, जो अपनी मजबूती के लिए जानी जाती है, इसके पैनल पारंपरिक जापानी तकनीकों का उपयोग करके बिना स्क्रू या गोंद के बनाए गए हैं, जिससे यह हल्का और बायोडिग्रेडेबल बनता है।
- पुनः प्रवेश करने पर लकड़ी का ढांचा पूरी तरह जल जाएगा तथा मलबा नष्ट हो जाएगा।
- यह छह महीने तक पृथ्वी की परिक्रमा करेगा तथा ब्रह्मांडीय विकिरण, उच्च तापमान परिवर्तन और सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण को सहन करेगा।
- 10 सेमी के छोटे आकार और मात्र 900 ग्राम वजन के साथ, इसका अद्वितीय बायोडिग्रेडेबल डिज़ाइन पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम करता है।



लिग्नोसैट

भारत प्रोबा-3 लॉन्च करेगा: सूर्य के कोरोना के लिए एक मिशन



चर्चा में क्यों ?

भारत अगले महीने श्रीहरि कोटा अंतरिक्ष स्टेशन से यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) के प्रोबा-3 मिशन को लॉन्च करने के लिए तैयार है। यह महत्वपूर्ण घटना वैश्विक अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की बढ़ती भूमिका और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

प्रोबा3- मिशन के बारे में

- यह ईएसए का पहला मिशन है जो सटीक उड़ान पर केंद्रित है।
- इसमें दो उपग्रह शामिल हैं : एक कोरोनाग्राफ और एक ऑकुल्टर।
 - ◆ ऑकुल्टर उपग्रह: कोरोनाग्राफ उपग्रह की दूरबीन पर एक सटीक छाया डालेगा, जो सूर्य के तीव्र प्रकाश को अवरुद्ध करेगा।
 - ◆ कोरोनाग्राफ उपग्रह: यह दृश्य, पराबैंगनी और ध्रुवीकृत प्रकाश में सूर्य के कोरोना का निरीक्षण करेगा।

सूर्य का कोरोना क्या है ?

- यह वायुमंडल की सबसे बाहरी परत है। यह प्लाज्मा का एक गर्म, लेकिन अपेक्षाकृत मंद क्षेत्र है जो अंतरिक्ष में लाखों किलोमीटर तक फैला हुआ है।
- सूर्य के कोरोना के बारे में मुख्य बातें:
 - ◆ अत्यधिक गर्म: सूर्य के केन्द्र से दूर होने के बावजूद, कोरोना सूर्य की सतह से काफी गर्म है।
 - ◆ सूर्यग्रहण के दौरान दृश्यता: कोरोना प्रायः सूर्य के तेज प्रकाश के कारण अस्पष्ट हो जाता है, लेकिन पूर्ण सूर्यग्रहण के दौरान यह दिखाई देने लगता है।
 - ◆ सौर वायु का स्रोत: सौर वायु, आवेशित कणों की एक धारा, कोरोना से उत्पन्न होती है।
 - ◆ पृथ्वी के अंतरिक्ष पर्यावरण को प्रभावित करता है: कोरोनाल मास इजेक्शन सहित सौर गतिविधि, पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को प्रभावित कर सकती है और संचार प्रणालियों को बाधित कर सकती है।

उद्देश्य:

- ◆ सूर्य के कोरोना और पृथ्वी पर उसके प्रभाव का अध्ययन करना।
- ◆ मिशन का उद्देश्य कोरोनाल मास इजेक्शन (सीएमई) की समझ को गहरा करना भी है, जो पृथ्वी के उपग्रहों और ऊर्जा प्रणालियों को प्रभावित कर सकता है।
- ◆ इससे कोरोनाग्राफ को दृश्यमान, UV और ध्रुवीकृत प्रकाश में सूर्य के धुंधले कोरोना के विस्तृत, विस्तृत चित्र लेने की अनुमति मिलती है।
- ◆ यह सूर्य के कुल सौर विकिरण पर भी नजर रखेगा, ताकि सौर ऊर्जा में होने वाले उन बदलावों का अध्ययन किया जा सके, जो पृथ्वी की जलवायु पर प्रभाव डाल सकते हैं।



सूर्य का कोरोना

पिनाका रॉकेट प्रणाली



चर्चा में क्यों ?

फ्रांसीसी सेना भारत की पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर प्रणाली के अधिग्रहण पर विचार कर रही है। द्विपक्षीय वार्ता के दौरान, ब्रिगेडियर जनरल स्टीफन रिचौ ने एक अग्रणी हथियार निर्माता के रूप में भारत के उदय की सराहना की। यह रुचि फ्रांस और भारत के बीच बढ़ते रक्षा सहयोग को दर्शाती है, जो अब संयुक्त उत्पादन, सैन्य अभ्यास और सिर्फ वाणिज्यिक संबंधों से कहीं ज्यादा तक फैल गया है।

पिनाका के बारे में

- यह एक मल्टी-बैरल रॉकेट लांचर (एमबीआरएल) है।
- इसे डीआरडीओ की प्रयोगशाला, आर्मामेंट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (एआरडीई) द्वारा डिजाइन किया गया है।

- इसका पहली बार प्रयोग कारगिल युद्ध के दौरान किया गया था, जहां इसने पहाड़ की चोटियों पर पाकिस्तानी सेना के ठिकानों को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया था।
- यह विभिन्न प्रकार के क्षेत्रीय लक्ष्यों पर घातक और जवाबी हमला करता है, जैसे कि खुले में खड़े दुश्मन के सैनिक, बख्तरबंद और नरम-त्वचा वाले वाहन, संचार केंद्र, हवाई टर्मिनल परिसर, तथा ईंधन और गोला-बारूद के भंडार।
- विशेषताएँ
 - ◆ इसमें एक मल्टी-ट्यूब लांचर वाहन, एक पुनःपूर्ति-सह-लोडर वाहन, एक पुनःपूर्ति वाहन और एक कमांड पोस्ट वाहन शामिल हैं।
 - ◆ रॉकेट लांचर में दो पॉड हैं, जिनमें से प्रत्येक में छह रॉकेट हैं और यह 48 सेकंड के भीतर 700 × 500 वर्ग मीटर के क्षेत्र को नष्ट कर सकता है।
 - ◆ फायरिंग के समय लांचर प्रणाली चार हाइड्रॉलिक रूप से संचालित आउट्रिगर्स पर आधारित होती है।
 - ◆ इसकी मारक क्षमता 75 किलोमीटर तक है।
 - ◆ गतिशीलता के लिए यह प्रणाली टाट्टा ट्रक पर लगाई गई है।



पिनाका: मल्टी बैरल रॉकेट लॉन्च (एमबीआरएल) प्रणाली

अभ्यास आयोजित कर रही है। इस अभ्यास का उद्देश्य अंतरिक्ष आधारित परिसंपत्तियों और सेवाओं के लिए बढ़ते खतरों से निपटना है। यह सैन्य अभियानों में अंतरिक्ष क्षमताओं को एकीकृत करने और अंतरिक्ष में राष्ट्रीय रणनीतिक उद्देश्यों को सुरक्षित करने के भारत के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

अंतरिक्ष अभ्यास- 2024 के बारे में

- **उद्देश्य :** यह अभ्यास अंतरिक्ष संबंधी खतरों से निपटने और अंतरिक्ष में राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा भारत की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमताओं को सैन्य अभियानों में एकीकृत करने पर केंद्रित है।
- **प्रतिभागी:**
 - ◆ रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी और सेना, नौसेना और वायु सेना की संबद्ध इकाइयाँ।
 - ◆ रक्षा साइबर एजेंसी , रक्षा खुफिया एजेंसी और सामरिक बल कमान भी इसमें भाग ले रहे हैं।
 - ◆ इस अभ्यास में इसरो और डीआरडीओ के प्रतिनिधि महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।
- **उद्देश्य:**
 - ◆ अंतरिक्ष-आधारित सेवाओं और परिसंपत्तियों पर परिचालन निर्भरता को बेहतर ढंग से समझना।
 - ◆ अंतरिक्ष आधारित सेवाओं में व्यवधान या अस्वीकृति की स्थिति में सैन्य अभियानों में कमजोरियों की पहचान करना।
 - ◆ इसरो, डीआरडीओ और शिक्षा जगत सहित हितधारकों के साथ सहयोग बढ़ाना।
- **मुख्य बिंदु:** यह अभ्यास अंतरिक्ष में राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने पर जोर देता है क्योंकि अंतरिक्ष तेजी से भीड़भाड़ वाला, विवादित, प्रतिस्पर्धी और वाणिज्यिक होता जा रहा है।
- **चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का वक्तव्य:** जनरल अनिल चौहान ने भारत की रक्षा और सुरक्षा में अंतरिक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया तथा राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने के लिए नवाचार को बढ़ावा देने और उन्नत प्रौद्योगिकियों के विकास के महत्व को रेखांकित किया।

डीआरडीओ ने ओडिशा तट से लंबी दूरी की भूमि पर हमला करने वाली क्रूज मिसाइल का पहला उड़ान परीक्षण किया



चर्चा में क्यों ?

12 नवंबर 2024 को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने ओडिशा के तट से लंबी दूरी की लैंड अटैक क्रूज

पहला अंतरिक्ष अभ्यास 'अंतरिक्ष अभ्यास - 2024'



चर्चा में क्यों ?

रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी, मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ के तहत, 11 से 13 नवंबर तक अंतरिक्ष अभ्यास - 2024 नामक एक अग्रणी तीन दिवसीय

मिसाइल (LRLACM) का पहला उड़ान परीक्षण सफलतापूर्वक किया। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत की रक्षा क्षमताओं में एक मील का पत्थर है, जो स्वदेशी मिसाइल प्रौद्योगिकी में प्रगति को प्रदर्शित करती है।



एलआरएलएसीएम का परीक्षण

लंबी दूरी की भूमि पर हमला करने वाली क्रूज मिसाइल (एलआरएलएसीएम) के बारे में

- यह पूर्णतः स्वदेशी मिसाइल है, जिसमें कुछ सेंसरों और एक्सेलेरोमीटरों को छोड़कर अधिकांश घटक स्थानीय स्तर पर ही प्राप्त किए गए हैं।
- यह सबसोनिक मिसाइल है, जो कम ऊंचाई पर भूभाग से सटे रास्तों पर उड़ान भरने में सक्षम है, जिससे दुश्मन की रक्षा प्रणालियों द्वारा इसका पता लगाना और अवरोधन करना कठिन हो जाता है।
 - ◆ जैसे कि अमेरिकी टॉमहॉक और रूस की कैलिबर जैसी अंतर्राष्ट्रीय प्रणालियाँ, जो सटीक, लंबी दूरी के हमलों के लिए जानी जाती हैं।
- ये आधुनिक सैन्य शस्त्रागार के लिए आवश्यक हैं, जो प्रक्षेपण प्लेटफॉर्म और कर्मियों को सुरक्षित रखते हुए रणनीतिक लक्ष्यों के विरुद्ध लंबी दूरी के, सीधे हमले को संभव बनाते हैं।
 - ◆ निर्माण: डीआरडीओ के बेंगलूरु स्थित वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई) द्वारा।
 - ◆ उत्पादन साझेदार : भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल), हैदराबाद, और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल), बेंगलूरु ने मिसाइल के एकीकरण और तैनाती में सहयोग किया है।

- ◆ **लॉन्च प्लेटफॉर्म** : मिसाइल को जमीनी और नौसैनिक तैनाती दोनों के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसे यूनिवर्सल वर्टिकल लॉन्च मॉड्यूल (UVLM) का उपयोग करके मोबाइल ग्राउंड प्लेटफॉर्म और जहाजों से लॉन्च किया जा सकता है, जो पहले से ही 30 भारतीय नौसेना के जहाजों पर चालू है।
- ◆ **रेंज**: इस मिसाइल की योजनाबद्ध रेंज 1,000 किलोमीटर से अधिक है।

भारत ने अपनी पहली लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया



चर्चा में क्यों ?

17 नवंबर 2024 को, भारत ने खुलासा किया कि रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने ओडिशा के तट पर देश की पहली लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया, जो एक नई हथियार प्रणाली के साथ सैन्य क्षमताओं को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

हाइपरसोनिक मिसाइल के बारे में

- हाइपरसोनिक मिसाइल मैक 5 (लगभग 6,174 किमी/घंटा) से अधिक गति से यात्रा करने में सक्षम है, जो ध्वनि की गति से पांच गुना अधिक है।
- **विकास और उद्देश्य** :
 - ◆ विभिन्न पेलोड ले जाने और 1,500 किमी से अधिक दूरी पर स्थित लक्ष्यों पर निशाना साधने के लिए डिज़ाइन किया गया।
 - ◆ हाइपरसोनिक मिसाइलों को मुख्य रूप से सैन्य उपयोग के लिए विकसित किया जाता है ताकि युद्ध परिदृश्यों में सटीकता, गति और गुप्त क्षमताओं को बढ़ाया जा सके।
- **प्रमुख विशेषताएँ** :
 - ◆ **गति** : हाइपरसोनिक मिसाइलें अत्यधिक गति (मैक 6 या उससे अधिक) से चलती हैं, जिससे उन्हें पारंपरिक मिसाइल रक्षा प्रणालियों द्वारा रोकना कठिन हो जाता है।
 - ◆ **गतिशीलता** : पारंपरिक बैलिस्टिक मिसाइलों के विपरीत, हाइपरसोनिक मिसाइलें उड़ान के दौरान गतिशील हो सकती हैं,

जिससे उनका पूर्वानुमान लगाना और अवरोधन करना कठिन हो जाता है।

- ◆ **कम ऊंचाई पर उड़ान :** ये मिसाइलें अक्सर नियमित मिसाइलों की तुलना में कम ऊंचाई पर उड़ती हैं, जिससे उन्हें रडार द्वारा पता लगाना कठिन हो जाता है।
- ◆ **पेलोड :** मिशन के आधार पर, परमाणु और पारंपरिक वारहेड सहित विभिन्न प्रकार के पेलोड ले जाने में सक्षम।

● **परीक्षण और विकास :**

- ◆ भारत के डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) ने ओडिशा के डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से अपनी पहली लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।

- ◆ मिसाइल पर बहु-श्रेणी प्रणालियों द्वारा नज़र रखी गई, तथा इसके सफल टर्मिनल संचालन की पुष्टि डाउनरेंज जहाज स्टेशनों से प्राप्त उड़ान डेटा के माध्यम से की गई।



पहली लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल का परीक्षण



प्रथम एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन 2024



चर्चा में क्यों ?

प्रथम एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन हाल ही में सुर्खियों में रहा, क्योंकि इसमें एशिया भर से बौद्ध नेताओं, विद्वानों और आध्यात्मिक प्रतिनिधियों ने समाज और संस्कृति पर बौद्ध शिक्षाओं के स्थायी प्रभाव पर चर्चा करने के लिए एक साथ आये थे।

शिखर सम्मेलन के बारे में

- इस शिखर सम्मेलन में 32 देशों के विविध प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- यह बुद्ध धम्म के सिद्धांतों के इर्द-गिर्द एशियाई देशों की एकता को उजागर करता है।
- इसका उद्देश्य वैश्विक चुनौतियों के समय में शांति, करुणा और नैतिक अखंडता को बढ़ावा देना था।
- शिखर सम्मेलन में संपन्न दिल्ली घोषणापत्र में एक दयालु और समावेशी एशिया को बढ़ावा देने का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया।
- **विषय:** 'एशिया को मजबूत बनाने में बुद्ध धम्म की भूमिका'

बौद्ध धर्म के बारे में

- **उत्पत्ति:** छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत में द्वितीय शहरीकरण और सामाजिक परिवर्तन के बीच गंगा के मैदान में।
- बुद्ध की शिक्षाओं ने वैदिक अनुष्ठानों और जाति व्यवस्था से असंतुष्ट लोगों को आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप पूरे उत्तर भारत में उन्हें व्यापक स्वीकृति मिली।
 - ◆ व्यापारियों और कारीगरों से प्राप्त राजनीतिक और आर्थिक समर्थन ने बौद्ध धर्म के विस्तार में योगदान दिया।
- **विस्तार:** मौर्य राजवंश ने भारत और उसके बाहर बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **भारत में पतन :** गुप्त वंश के दौरान बौद्ध धर्म का पतन शुरू हो गया और सामाजिक-राजनीतिक कारकों के कारण 12वीं शताब्दी तक यह भारत से लगभग लुप्त हो गया।
- **भारत के बाहर अस्तित्व :** भारत में गिरावट के बावजूद, बौद्ध धर्म अन्य एशियाई देशों में फलता-फूलता रहा।
- **बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य (चत्वारि आर्य सत्यानी)**
 - ◆ दुःख का सत्य: हम निरन्तर असंतोष की स्थिति में जी रहे हैं।
 - ◆ दुख की उत्पत्ति का सत्य: दुख/असंतोष कारणों और परिस्थितियों से उत्पन्न होता है।
 - ◆ समाप्ति का सत्य: ऐसी स्थिति तक पहुंचने की संभावना है जहां असंतोष/दुख समाप्त हो गया है।
 - ◆ मार्ग का सत्य: हमारे लिए एक मार्ग है जिसका अनुसरण करके हम ऐसी स्थिति तक पहुंच सकते हैं।
- **आर्य अष्टांगिक मार्ग (अष्टांगिक मार्ग)**

◆ सम्यक दृष्टि	◆ सम्यक प्रयास
◆ सम्यक वाणी	◆ सम्यक स्मृति
◆ सम्यक कर्म	◆ सम्यक एकाग्रता
◆ सम्यक आजीविका	



बौद्ध भिक्षु

राष्ट्र लाला लाजपत राय को उनकी 96वीं पुण्यतिथि पर स्मरण कर रहा है



चर्चा में क्यों?

पंजाब केसरी के नाम से मशहूर लाला लाजपत राय को उनकी 96 वीं पुण्यतिथि पर राष्ट्र याद कर रहा है। साइमन कमीशन के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किए जाने के बाद सिर में चोट लगने के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी। मोगा में उनके पैतृक गांव धुडीके में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया, जिसमें पंजाब के कैबिनेट मंत्री हरपाल सिंह चीमा और अन्य लोग शामिल हुए।

लाला लाजपत राय के बारे में

- **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा**
 - ◆ 28 जनवरी 1865 को धुडिके, पंजाब में जन्मे।
 - ◆ गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से कानून की पढ़ाई की।
 - ◆ आर्य समाज से प्रभावित होकर वे सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों में शामिल हुए।
- **भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका**
 - ◆ *पंजाब केसरी* (पंजाब का शेर) के नाम से प्रसिद्ध।
 - ◆ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) के प्रमुख नेता।
 - ◆ बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल के साथ लाल-बाल-पाल तिकड़ी के सदस्य।
- **सामाजिक सुधार और वकालत**
 - ◆ भारतीय समाज के उत्थान, शिक्षा और जातिगत भेदभाव से लड़ने पर ध्यान केंद्रित किया।
 - ◆ स्वराज और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दिया।
- **राष्ट्रवादी आंदोलन में नेतृत्व**
 - ◆ स्वदेशी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, भारतीय वस्तुओं को बढ़ावा दिया और ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार किया।
 - ◆ 1905 के बंगाल विभाजन का सक्रिय रूप से विरोध किया, जिसका उद्देश्य भारतीय एकता को विभाजित करना था।
 - ◆ होम रूल आंदोलन का समर्थन किया, ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर अधिक स्वायत्तता की वकालत की।
- **राजनीतिक जीवन**
 - ◆ 1917 में अमेरिका में इंडियन होम रूल लीग की स्थापना की।
 - ◆ 1926 में केन्द्रीय विधान सभा के उपनेता चुने गये।
 - ◆ 1920 में कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जो पार्टी के लिए एक संक्रमण काल था।

- **विरोध प्रदर्शन और आंदोलन में नेतृत्व**
 - ◆ 1928 में साइमन कमीशन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया, ब्रिटिश पुलिस द्वारा लाठीचार्ज में घातक चोटें आईं।
 - ◆ शुरुआत में उन्होंने गांधीजी के असहयोग आंदोलन का विरोध किया, लेकिन बाद में इसका समर्थन किया तथा चौरी-चौरा की घटना के बाद भी इसे जारी रखने की वकालत की।
- **विरासत और योगदान**
 - ◆ वह अपने पत्रकारिता कार्य और लेखन के लिए जाने जाते हैं, जिसने जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित किया।
 - ◆ सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके नेतृत्व और योगदान ने एक प्रमुख राष्ट्रवादी व्यक्ति के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत किया।
- **मृत्यु और स्मरण**
 - ◆ 1928 में ब्रिटिश पुलिस की क्रूरता से लगी चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।
 - ◆ भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक शहीद और नायक के रूप में याद किया जाता है।



लाला लाजपत राय



प्रधानमंत्री मोदी रियो डी जेनेरियो में जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे

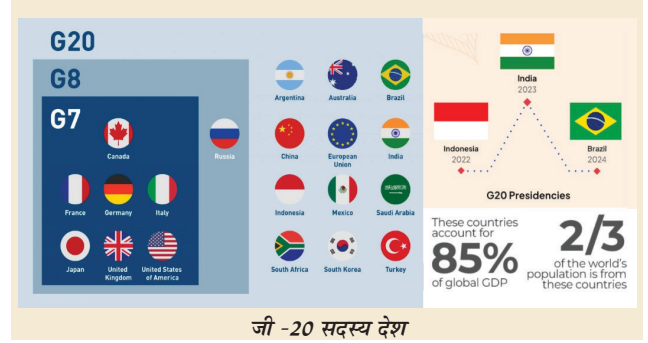


चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रियो डी जेनेरियो में जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग ले रहे हैं, जिसमें वैश्विक मुद्दों पर भारत की स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा और नई दिल्ली शिखर सम्मेलन के परिणामों पर निर्माण किया जाएगा। मुख्य चर्चाओं में स्थिरता, सामाजिक समावेश, गरीबी और शासन सुधार शामिल हैं। मोदी वैश्विक नेताओं के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी करेंगे। जी-20 ट्रोइका के हिस्से के रूप में भारत अफ्रीकी संघ के समावेश और वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं की वकालत जैसी पहलों के माध्यम से अपने नेतृत्व को उजागर करता है।

जी-20 के बारे में

- 1990 के दशक के एशियाई वित्तीय संकट के बाद 1999 में वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में जी-20 की स्थापना की गई थी।
- 2008 के वैश्विक वित्तीय और आर्थिक संकट से निपटने के लिए इसे 2008 में शिखर सम्मेलन स्तर तक उठाया गया।
- **उद्देश्य:** विश्व की सबसे बड़ी उन्नत एवं उभरती अर्थव्यवस्थाओं को शामिल करके वैश्विक वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना।
- **जी-20 की संरचना और कार्यप्रणाली**
- जी-20 की अध्यक्षता प्रतिवर्ष बदलती रहती है।
- कोई स्थायी सचिवालय या मुख्यालय नहीं
- 19 देशों को 5 समूहों में बांटा गया है।
- प्रत्येक समूह के बीच अध्यक्षता घूमती रहती है।
- **ट्रोइका:** यह वर्तमान राष्ट्रपति पद, पिछले राष्ट्रपति पद और अगले राष्ट्रपति पद के बीच एक कार्यकारी संघ है।
- **सदस्य:**



डुमा बोको को बोत्सवाना का छठा राष्ट्रपति घोषित किया गया



चर्चा में क्यों ?

मुख्य न्यायाधीश टेरेंस रानोवने ने अम्ब्रेला फॉर डेमोक्रेटिक चेंज (यूडीसी) के डुमा बोको को बोत्सवाना का छठा राष्ट्रपति घोषित किया। यूडीसी ने 34 नेशनल असेंबली सीटें हासिल कीं, जो सत्तारूढ़ बोत्सवाना डेमोक्रेटिक पार्टी (बीडीपी) से आगे निकल गई, जिसने केवल चार सीटें जीतीं। निवर्तमान राष्ट्रपति मोकग्वेट्सी मासीसी ने हार स्वीकार कर ली, जिससे बोत्सवाना में बीडीपी के लगभग छह दशक के शासन का अंत हो गया।

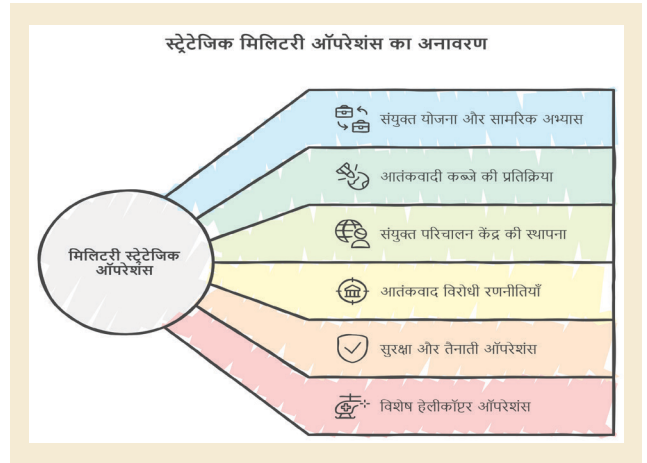
बोत्सवाना

- **अवस्थिति:** यह दक्षिणी अफ्रीका में स्थित एक स्थलरुद्ध देश है।
- **सीमा:** पश्चिम और उत्तर में नामीबिया, उत्तर-पूर्व में जिम्बाब्वे, उत्तर में एक छोटे से सीमा बिंदु पर जाम्बिया तथा दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में दक्षिण अफ्रीका।
- **राजधानी:** गबोरोन
- ब्रिटिश शासन के तहत इसे पहले बेचुआनालैंड के नाम से जाना जाता था, इसे 30 सितंबर 1966 को ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

- यह शांतिपूर्ण ढंग से एक स्वतंत्र राष्ट्र में परिवर्तित हो गया और तब से यह अफ्रीका के सबसे राजनीतिक रूप से स्थिर देशों में से एक है।
- **राजनीतिक प्रणाली:** संसदीय प्रतिनिधि लोकतांत्रिक गणराज्य।
- **अध्यक्ष:** डूमा बोको
- **मुद्रा:** बोत्सवाना पुला (BWP)
- **आधिकारिक भाषा:** अंग्रेजी (सेत्सवाना व्यापक रूप से बोली जाती है)।
- अफ्रीका की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक, जो हीरा खनन, पर्यटन और गोमांस निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर है।
- अपने विशाल हीरा खनन उद्योग के कारण इसे “हीरों की भूमि” के रूप में जाना जाता है।
- यह कालाहारी रेगिस्तान से घिरा हुआ है और अपने विविध वन्य जीवन के लिए जाना जाता है, विशेष रूप से ओकावांगो डेल्टा, जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।



- **भारतीय दल:** इसमें 140 कार्मिक शामिल हैं, जिनमें मुख्य रूप से डोगरा रेजिमेंट से हैं, और 14 भारतीय वायु सेना कार्मिक हैं।
- **ऑस्ट्रेलियाई दल:** इसमें 10 वीं ब्रिगेड, द्वितीय डिवीजन की 13 वीं लाइट हॉर्स रेजिमेंट के 120 कार्मिक शामिल हैं।
- **उद्देश्य :** संयुक्त राष्ट्र अधिदेश के अध्याय VII के अंतर्गत अर्ध-शहरी और अर्ध-रेगिस्तानी इलाकों में संयुक्त उप-पारंपरिक अभियानों में अंतर-संचालन क्षमता में सुधार करके सैन्य सहयोग को बढ़ावा देना।
- **अभ्यास के चरण :**
- **युद्ध अनुकूलन और सामरिक प्रशिक्षण चरण :** शारीरिक दक्षता और सामरिक अभ्यास पर जोर।
- **सत्यापन चरण :** संयुक्त संचालन प्रक्रियाओं का परीक्षण और सत्यापन।
- **अपेक्षित परिणाम :** बढ़ी हुई सामरिक अंतर-संचालनीयता, सर्वोत्तम प्रथाओं का साझाकरण, तथा भारतीय और ऑस्ट्रेलियाई सैन्य कर्मियों के बीच मजबूत संबंध।
- **मुख्य क्षेत्र:**



अभ्यास ऑस्ट्राहिन्द 2024



चर्चा में क्यों ?

संयुक्त सैन्य अभ्यास का तीसरा संस्करण, अभ्यास ऑस्ट्राहिन्द, 8 नवंबर, 2024 को पुणे, महाराष्ट्र में शुरू हुआ। भारत और ऑस्ट्रेलिया में बारी-बारी से आयोजित होने वाला यह वार्षिक अभ्यास भारतीय और ऑस्ट्रेलियाई सेनाओं के बीच सैन्य सहयोग और सामरिक अंतर-संचालन को बढ़ाने पर केंद्रित है। वर्तमान संस्करण ऑस्ट्रेलिया में आयोजित 2023 के अभ्यास के बाद आयोजित किया गया है।

अभ्यास के बारे में

- **तिथि और स्थान :** 8-21 नवंबर 2024, विदेशी प्रशिक्षण नोड, पुणे, महाराष्ट्र में।



नवीन रामगुलाम ने मॉरीशस चुनावों में 'ऐतिहासिक जीत' का जश्न मनाया



चर्चा में क्यों ?

मॉरीशस के आम चुनावों में ऐतिहासिक जीत हासिल करने के बाद डॉ. नवीन रामगुलाम मॉरीशस के नए प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। इस उपलब्धि पर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई दी। मोदी ने भारत-मॉरीशस संबंधों को बढ़ाने के लिए रामगुलाम के साथ सहयोग करने की इच्छा जताई और उन्हें भारत आने का निमंत्रण दिया।

मॉरीशस के बारे में

- **जगह :**
 - ◆ यह अफ्रीकी महाद्वीप के पूर्व में हिंद महासागर में स्थित एक द्वीप राष्ट्र है। यह अफ्रीकी मुख्य भूमि के दक्षिण-पूर्वी तट से लगभग 2,000 किलोमीटर दूर, मेडागास्कर के पूर्व में स्थित है।
 - ◆ इस देश में मॉरीशस का मुख्य द्वीप, रोड्रिग्स द्वीप और कई छोटे द्वीप शामिल हैं।
- **राजधानी :** पोर्ट लुईस
- **बड़े शहर :**
 - ◆ सुरेपिपे
 - ◆ वैंकोस-फीनिक्स
 - ◆ क्वात्रे बोर्नेस
 - ◆ ब्यू बेसिन-रोज़ हिल
 - ◆ माहेबर्ग

- **प्रमुख बंदरगाह :**
- **पोर्ट लुईस :** मॉरीशस का मुख्य वाणिज्यिक बंदरगाह।
- **पोर्ट मैथुरिन :** रोड्रिग्स द्वीप पर स्थित, अंतर-द्वीप व्यापार के लिए एक प्रमुख बंदरगाह।
- **मुद्रा :** मॉरीशस रुपया (MUR)
- **राजनीतिक प्रणाली :**
 - ◆ यह एक संसदीय गणतंत्र है।
 - ◆ राष्ट्रपति राज्य का प्रमुख होता है।
 - ◆ राष्ट्रपति की भूमिका काफी हद तक औपचारिक होती है, जबकि प्रधानमंत्री कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग करते हैं।
 - ◆ प्रधानमंत्री सरकार का मुखिया होता है।
 - ◆ मॉरीशस की संसद एक सदनीय विधायिका है, जिसमें 70 सदस्यों वाली राष्ट्रीय सभा शामिल है।



मॉरीशस का मानचित्र

महत्वपूर्ण दिन

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस 2024

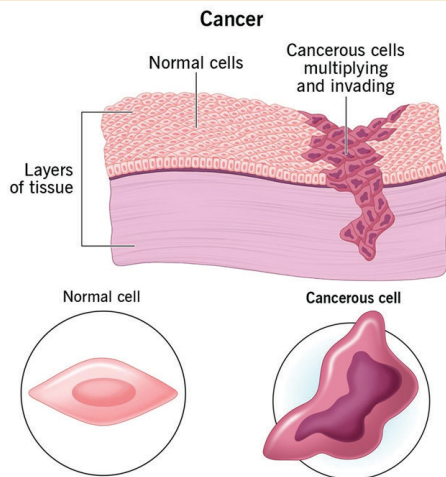
राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस

परिचय

- यह दिवस प्रत्येक वर्ष 7 नवम्बर को मनाया जाता है।
- उद्देश्य: यह एक पहल है जिसका उद्देश्य देश में बढ़ते कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाना और रोकथाम, शीघ्र पहचान और उपचार के लिए कार्रवाई को प्रेरित करना है।
- भारत विश्व का पहला देश है जिसने आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस को मान्यता दी है।
- यह दिन सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता के रूप में कैंसर से निपटने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

कैंसर के बारे में

- यह एक ऐसी बीमारी है जिसमें असामान्य कोशिकाएं अनियंत्रित रूप से बढ़ती हैं और संभवतः पूरे शरीर में फैल जाती हैं।
- यह विभिन्न अंगों और ऊतकों को प्रभावित कर सकता है, सामान्य शारीरिक कार्यों को बाधित कर सकता है और गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है।



कैंसर कोशिकाओं को दर्शाता चित्र

परिचय

हाल ही में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती और भारत के शैक्षिक परिदृश्य में उनके योगदान का स्मरण करने के क्रम में 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (NED) मनाया गया। भारत के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने आधारभूत संस्थानों की स्थापना के साथ सुलभ एवं समावेशी शिक्षा की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

- भारत सरकार ने पहली बार वर्ष 2008 में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती के स्मरण में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस की घोषणा की थी।

उपलब्धियाँ

- उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR), साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) की स्थापना की।
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) खड़गपुर की शुरुआत की, जिससे भारत के प्रमुख तकनीकी शिक्षा संस्थानों की नींव रखी गई।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस का महत्व

- यह शिक्षा को सामाजिक उन्नति एवं सशक्तीकरण के क्रम में आवश्यक मूल अधिकार के रूप में रेखांकित करने पर केंद्रित है।
- इसके तहत छात्रों एवं शिक्षकों को अबुल कलाम आज़ाद के सिद्धांतों पर चिंतन करने तथा रचनात्मकता एवं आजीवन सीखने के मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित करना शामिल है।

- इसके तहत शैक्षिक मुद्दों पर प्रकाश डालने के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली में आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने के क्रम में सुधारों पर चर्चा को महत्व दिया जाता है।

25 वाँ उत्तराखंड स्थापना दिवस



चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड की 25 वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्य की प्रगति का जश्न मनाते हुए अपने विचार साझा किए और इसके भविष्य के लिए अपने दृष्टिकोण को रेखांकित किया। उन्होंने उत्तराखंड द्वारा हासिल की गई उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला, जिसमें राज्य के बुनियादी ढांचे, शासन और आर्थिक विकास में तेजी से विकास शामिल है। यह उत्तराखंड की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है क्योंकि यह अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

25 वें उत्तराखंड स्थापना दिवस के बारे में

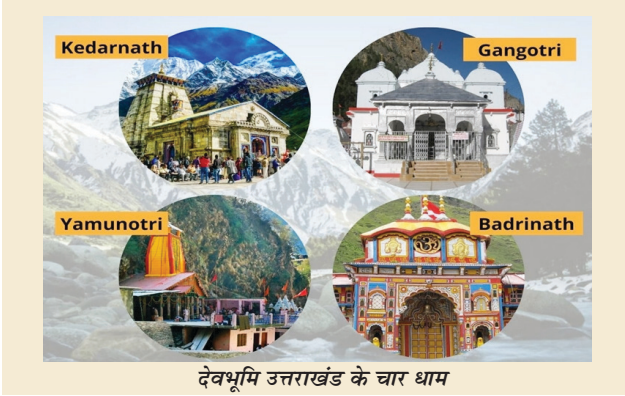
- **उत्तराखंड के विकास के लिए प्रधानमंत्री का विजन**
 - ◆ प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले 25 वर्षों में उत्तराखंड की प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की।
 - ◆ उन्होंने राज्य के निर्माण में भाजपा नीत एनडीए सरकार की भूमिका को श्रेय दिया, जो उत्तराखंड के लोगों के निरंतर संघर्ष का परिणाम था।
 - ◆ प्रधानमंत्री ने राज्य में हुए परिवर्तनकारी बदलावों पर जोर दिया, जैसे सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में उच्चतम वृद्धि हासिल करना और व्यापार करने में आसानी में सुधार करना।
- **प्रधानमंत्री के नौ अनुरोध:** इस शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने नौ अनुरोध किए - पांच उत्तराखंड के लोगों से और चार राज्य में आने वाले पर्यटकों से:
 - ◆ **उत्तराखंड के निवासियों के लिए :**
 - गढ़वाली, कुमाऊंनी और जौनसारी जैसी समृद्ध बोलियों को पढ़ाएं और संरक्षित करें।
 - पेड़ लगाने के लिए “एक पेड़ माँ के नाम” आंदोलन का समर्थन करें।
 - जल संसाधनों का संरक्षण करके नदियों और नौलों की रक्षा करें।
 - अपने गांवों से जुड़े रहें और पुराने तिवारी घरों को संरक्षित रखें।
 - आर्थिक अवसर सृजित करने के लिए पुराने घरों को होमस्टे में परिवर्तित करें।

पर्यटकों के लिए :

- हिमालय में स्वच्छता को प्राथमिकता दें और प्लास्टिक के उपयोग से बचें।
- यात्रा बजट का एक हिस्सा स्थानीय स्तर पर खर्च करके स्थानीय उत्पादों का समर्थन करें।
- पहाड़ी इलाकों में यातायात नियमों का पालन करें।
- धार्मिक स्थलों पर जाने से पहले स्थानीय रीति-रिवाजों और नियमों के बारे में जान लें।

उत्तराखंड के बारे में

- इसका गठन 9 नवंबर 2000 को भारत के 27वें राज्य के रूप में हुआ था।
- ◆ इसे उत्तरी उत्तर प्रदेश (यूपी) से अलग करके बनाया गया था।
- **राजधानी:** देहरादून
- **स्थान:** हिमालय पर्वत श्रृंखला की तलहटी में।
 - ◆ यह मुख्यतः एक पहाड़ी राज्य है।
 - ◆ इसके उत्तर-पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश स्थित है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ:** उत्तर में चीन (तिब्बत) और पूर्व में नेपाल के साथ।
- यह प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर जल और वनों से समृद्ध है, जिसमें अनेक ग्लेशियर, नदियाँ, घने जंगल और बर्फ से ढकी पर्वत चोटियाँ हैं।
- **चार धाम:** बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री - ये चार सबसे पवित्र और पूजनीय हिंदू मंदिर हैं जो विशाल पर्वतों में बसे हैं।
- **जैव विविधता:** यह राज्य दुर्लभ जैव विविधता से समृद्ध है। अन्य बातों के अलावा, राज्य में सुगंधित और औषधीय पौधों की 175 दुर्लभ प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- **जलवायु क्षेत्र:** इसमें लगभग सभी प्रमुख जलवायु क्षेत्र मौजूद हैं, जो इसे बागवानी, पुष्प-कृषि और कृषि में विभिन्न प्रकार के वाणिज्यिक अवसरों के लिए अनुकूल बनाते हैं।
- **खनिज:** राज्य खनिज भंडारों जैसे चूना पत्थर, संगमरमर, रॉक फॉस्फेट, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, तांबा, जिप्सम आदि से समृद्ध है।
- **अर्थव्यवस्था**
 - ◆ लघु उद्योगों की संख्या 25,294 है जो 63,599 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करते हैं।
 - ◆ 20,000 करोड़ रुपये के निवेश वाले 1802 भारी और मध्यम उद्योगों में 5 लाख लोगों को रोजगार मिला है।
 - ◆ अधिकांश उद्योग वन आधारित हैं। राज्य में कुल 54,047 हस्तशिल्प इकाइयाँ हैं।



जनजातीय गौरव दिवस 2024

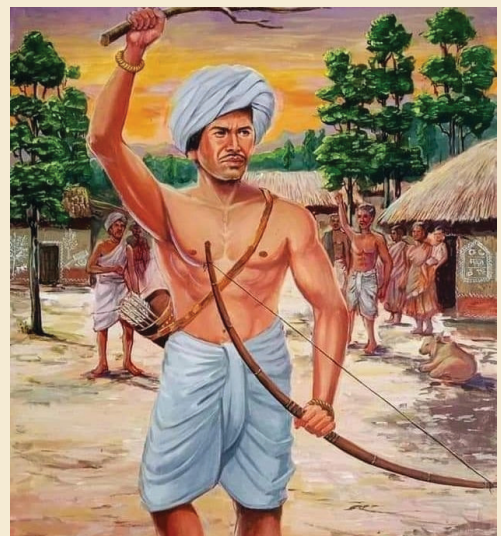
परिचय

- 2021 में, केंद्र सरकार ने 15 नवंबर, भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को राष्ट्रीय आदिवासी गौरव दिवस के रूप में घोषित किया।
- इसका उद्देश्य भगवान बिरसा मुंडा और अन्य आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को सम्मान देना है।
- अपनी परम्पराओं और गौरवपूर्ण इतिहास को स्वीकार करें।
- यह दिन एक महत्वपूर्ण अवसर है:
- आदिवासी समाज के संघर्षों को याद करें।
- उनके महत्वपूर्ण योगदान को पहचानें।
- अनुसूचित जनजातियों के संरक्षण के संबंध में भारतीय संविधान
 - ◆ अनुच्छेद 46: अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देने तथा उन्हें सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से सुरक्षा प्रदान करता है।
 - ◆ अनुच्छेद 243: इसमें पंचायतों में अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण का प्रावधान शामिल है।
 - ◆ अनुच्छेद 330: लोकसभा में अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है।
 - ◆ अनुच्छेद 337: राज्य विधानमंडलों में अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है।
 - ◆ अनुच्छेद 342: इस प्रावधान के अनुसार, राष्ट्रपति, संबंधित राज्य के राज्यपाल (राज्य के मामले में) से परामर्श करने के बाद, सार्वजनिक अधिसूचना के माध्यम से उन समुदायों को सूचीबद्ध कर सकते हैं जिन्हें उस उद्देश्य के लिए अनुसूचित जनजाति माना जाएगा। हालाँकि, संविधान में अनुसूचित जनजातियों को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है।
 - ◆ अनुच्छेद 350: अपनी मातृभाषा में शिक्षा तथा लिपि और संस्कृति के संरक्षण का अधिकार प्रदान करता है।

- ◆ अनुच्छेद 371: इसमें पूर्वोत्तर राज्यों और सिक्किम से संबंधित विशेष प्रावधान शामिल हैं।

भगवान बिरसा मुंडा के बारे में

- जन्म : 15 नवम्बर 1875, उलिहातु गांव, झारखंड में एक साधारण मुंडा परिवार में।
- प्रारंभिक संघर्ष : छोटी उम्र से ही आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; सामाजिक असमानता और उत्पीड़न का अनुभव किया।
- स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका
 - ◆ ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध उलगुलान (आदिवासी विद्रोह) का नेतृत्व किया।
 - ◆ ब्रिटिश-लागू भूमि नीतियों, जबरन धर्मांतरण और जनजातीय परंपराओं में हस्तक्षेप करने वाले कानूनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- समाज सुधारक
 - ◆ जनजातीय समाज में अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, शराबखोरी और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जागरूकता फैलाना।
 - ◆ उन्होंने अपने अनुयायियों के बीच शिक्षा और एकता के महत्व पर जोर दिया।
- धार्मिक आंदोलन: शुद्धता, सादगी और सत्य के पालन को बढ़ावा देने के लिए बिरसा आंदोलन की शुरुआत की।
- भारतीय स्वतंत्रता में योगदान
 - ◆ उनके नेतृत्व और बलिदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।
 - ◆ अन्य आदिवासी समुदायों को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।



भगवान बिरसा मुंडा

‘जनजातीय गौरव दिवस 2023’ पर पहल शुरू की गई

- पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन):
 - ◆ 24,000 करोड़ रुपये की इस योजना का उद्देश्य परिवारों और बस्तियों को बुनियादी सुविधाओं से लाभान्वित करना और उन्हें परिपूर्ण करना है।
 - ◆ प्रधानमंत्री जनमन के तहत सरकार जनजातीय समूहों और आदिम जनजातियों तक पहुंचेगी, जिनमें से अधिकांश अभी भी जंगलों में रहते हैं।
 - ◆ इससे विलुप्त होने के कगार पर खड़ी जनजातियों की रक्षा होगी और उनका पोषण होगा।
- विकसित भारत संकल्प यात्रा: सभी गांवों तक पहुंचने और विभिन्न केंद्रीय योजनाओं के लिए पात्र लोगों को शामिल करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम।
- पीएम किसान योजना: पीएम ने देश भर के 8 करोड़ से अधिक किसानों के लिए पीएम किसान योजना की 15वीं किस्त के रूप में 18,000 करोड़ रुपये भी जारी किए।

खेल

भारत ने चीन को हराकर महिला एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी का खिताब बरकरार रखा



चर्चा में क्यों ?

भारतीय महिला टीम ने सेमीफाइनल में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद वापसी करते हुए, अपने प्रदर्शन को उस समय बेहतर बनाया जब इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। उन्होंने 20 नवंबर 2024 को राजगीर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में होने वाले फाइनल में चीन पर 1-0 से जीत हासिल की और सफलतापूर्वक अपना एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी खिताब बरकरार रखा।



राजगीर में महिला एशियाई चैम्पियनशिप ट्रॉफी के फाइनल के दौरान चीन के खिलाफ पहला गोल करने के बाद भारतीय महिला हॉकी टीम की दीपिका का स्वागत करते हुए साथी खिलाड़ी। राजगीर में महिला एशियाई चैम्पियनशिप ट्रॉफी के फाइनल के दौरान चीन के खिलाफ पहला गोल करने के बाद भारतीय महिला हॉकी टीम की दीपिका का स्वागत करते हुए साथी खिलाड़ी।

संबंधित समाचार

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महिला एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में जीत के लिए भारतीय महिला हॉकी टीम की प्रशंसा की।
- उन्होंने कहा कि उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि भविष्य के एथलीटों को प्रेरित करेगी।
- एक्स पर एक पोस्ट में, पीएम मोदी ने कहा: “एक अभूतपूर्व उपलब्धि! महिला एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी जीतने पर हमारी हॉकी टीम को बधाई। उन्होंने पूरे टूर्नामेंट में असाधारण प्रदर्शन किया। उनकी सफलता कई उभरते खिलाड़ियों को प्रेरित करेगी।”

प्रमुख व्यक्तित्व

रानी लक्ष्मी बाई



चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय महिला वीरता की प्रतीक रानी लक्ष्मीबाई को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी।

रानी लक्ष्मी बाई के बारे में

- प्रारंभिक जीवन और पृष्ठभूमि :
 - ◆ जन्म: मणिकर्णिका तांबे, 19 नवंबर 1828 को वाराणसी में
 - बाद में वह लक्ष्मीबाई के नाम से जानी गयीं।
 - ◆ वह मोरोपंत तांबे की पुत्री थीं और साहस और वीरता से भरे वातावरण में पली-बढ़ी थीं।
 - ◆ छोटी उम्र में ही उनका विवाह झांसी के महाराजा राजा गंगाधर राव नेवालकर से हुआ और उनका दामोदर राव नाम का एक पुत्र हुआ।
- 1857 के विद्रोह में भूमिका
 - ◆ 1853 में उनके पति की मृत्यु के बाद, अंग्रेजों ने हड़प नीति का प्रयोग करके झांसी को हड़पने का प्रयास किया, जिसका उन्होंने कड़ा विरोध किया।
 - ◆ 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान, उन्होंने हथियार उठाए और झांसी की रक्षा के लिए अपनी सेना का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने असीम बहादुरी और सैन्य कौशल का परिचय दिया।
 - ◆ उन्होंने झांसी की लड़ाई में भाग लिया, जहां ब्रिटिश सेना द्वारा शहर पर कब्जा करने के बावजूद, प्रतिरोध की उनकी विरासत पौराणिक बन गई।

परंपरा

- ◆ बहादुरी और देशभक्ति के प्रतीक के रूप में जानी जाने वाली रानी लक्ष्मीबाई का ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध आज भी प्रेरणादायी है।
- ◆ उनका युद्धघोष, “ क्रांतिकारी रानी “ और “जय भवानी, जय शिवाजी “ प्रतिरोध की भावना का पर्याय बन गया।
- ◆ भारत भर में अनेक स्मारक और श्रद्धांजलि स्थल, जैसे कि रानी झांसी मरीन नेशनल पार्क और दिल्ली में रानी झांसी रोड, उनकी स्मृति में बनाये गये हैं।

मृत्यु और स्थायी प्रेरणा :

- ◆ रानी लक्ष्मीबाई 18 जून 1858 को ग्वालियर के युद्ध में अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए शहीद हो गईं।
- ◆ एक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी और साहस के प्रतीक के रूप में उनकी विरासत भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक शाश्वत प्रेरणा बनी हुई है।



रानी लक्ष्मी बाई

सरदार पटेल

परिचय

- **जन्म:** 31 अक्टूबर, 1875
- उन्होंने कानून की पढ़ाई की और एक कुशल वकील बने जो अपनी तीक्ष्ण कानूनी कुशलता के लिए जाने जाते थे।
- अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद वे 1910 में कानून की पढ़ाई करने लंदन चले गये।

- **अहमदाबाद में जीवन:** भारत लौटने के बाद पटेल अहमदाबाद में बस गए, जहां वे कानूनी पेशे में एक प्रमुख व्यक्ति बन गए।
- ◆ उन्होंने स्वयं को एक सफल आपराधिक वकील के रूप में स्थापित किया और जटिल कानूनी मामलों को संभालने की अपनी क्षमता के लिए सम्मान अर्जित किया।
- **राजनीति की ओर झुकाव:** प्रारंभ में पटेल का राजनीति की ओर कोई झुकाव नहीं था, लेकिन समय के साथ महात्मा गांधी के प्रभाव में वे स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय संघर्ष में गहराई से शामिल हो गए।
- 1917 तक पटेल गांधीवादी आंदोलन में शामिल हो गये और उन्होंने गांधीजी के अहिंसा और सत्य (सत्याग्रह) के दर्शन को अपना लिया।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

खेड़ा सत्याग्रह (1917)

- उन्होंने खेड़ा सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहां गुजरात के किसान अंग्रेजों द्वारा लागू की गई अनुचित कर नीतियों के खिलाफ विरोध कर रहे थे।
- उन्होंने गांधीजी के साथ मिलकर आंदोलन का नेतृत्व किया, किसानों को संगठित किया और करों में कमी तथा अकाल से प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करने के लिए दबाव बनाया।
- उनके नेतृत्व ने उन्हें राष्ट्रीय सुर्खियों में ला दिया।

असहयोग आंदोलन (1920-22)

- वह असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थे, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी विरोध था।
- उन्होंने गुजरात में आंदोलन की कमान संभाली, बड़ी संख्या में लोगों को संगठित किया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में 300,000 नये सदस्य बनाये।
- उन्होंने ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार को बढ़ावा देने और स्वदेशी आंदोलन का समर्थन करने में भी प्रमुख भूमिका निभाई, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक खादी का व्यापक उपयोग भी शामिल था।

बारडोली सत्याग्रह (1928)

- उनके नेतृत्व में बारडोली सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक घटना बन गयी।
- यह आंदोलन अंग्रेजों द्वारा भू-राजस्व में भारी वृद्धि के विरोध में शुरू किया गया था।
- भयंकर अकाल की स्थिति के बावजूद उन्होंने किसानों का अहिंसक विद्रोह का नेतृत्व किया और अंग्रेजों को कर वृद्धि वापस लेने पर मजबूर होना पड़ा।
- इस सफलता के कारण उन्हें ‘सरदार’ (अर्थात नेता या प्रमुख) की उपाधि दी गयी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में नेतृत्व

1931 कराची अधिवेशन

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उनका प्रभाव महत्वपूर्ण था और 1931 में उन्होंने कराची में आयोजित कांग्रेस के 46 वें अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- यह सत्र मौलिक अधिकार प्रस्ताव के पारित होने के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो भारत के भावी संविधान का आधार बना।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

नमक सत्याग्रह और व्यक्तिगत भागीदारी

- वह नमक उत्पादन पर ब्रिटिश एकाधिकार और उसके दमनकारी कराधान के खिलाफ गांधीजी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह में प्रमुख भागीदार थे।
- प्रसिद्ध दांडी मार्च सहित विरोध प्रदर्शनों के आयोजन में उनका योगदान महत्वपूर्ण था और बाद में आंदोलन में शामिल होने के कारण उन्हें गिरफ्तार भी किया गया था।
- उनके प्रयास पूरे देश में अहिंसक प्रतिरोध के विचार को फैलाने में केन्द्रीय थे।

बहिष्कार और अहिंसक विरोध:

- इस आंदोलन के दौरान, पटेल ने ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार, करों की अस्वीकृति और स्वदेशी के विचार के प्रसार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा के लिए उनकी वकालत स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख पहलू बन गई।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

- भारत छोड़ो आंदोलन में नेतृत्वकारी भूमिका: 1942 में, वे भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक के रूप में उभरे, जिसका उद्देश्य भारत से अंग्रेजों की तत्काल वापसी था।
 - ◆ उन्होंने पूरे भारत में विरोध प्रदर्शन, हड़ताल और सविनय अवज्ञा के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
 - ◆ उनका नेतृत्व जनसंख्या के बड़े हिस्से को संगठित करने तथा उनसे सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से स्वतंत्रता की मांग करने का आग्रह करने में महत्वपूर्ण था।
- **राष्ट्रीय लामबंदी और रणनीति:** उन्होंने लोगों को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हुए शक्तिशाली भाषण दिए और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार और सिविल सेवाओं को बंद करने के अभियानों का नेतृत्व किया।
 - ◆ उन्होंने आंदोलन के लिए वित्तीय सहायता भी जुटाई और राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार होने से बचाने के लिए भी काम किया।

स्वतंत्रता के बाद भारत के एकीकरण और राष्ट्र निर्माण में योगदान

रियासतों का एकीकरण (1947):

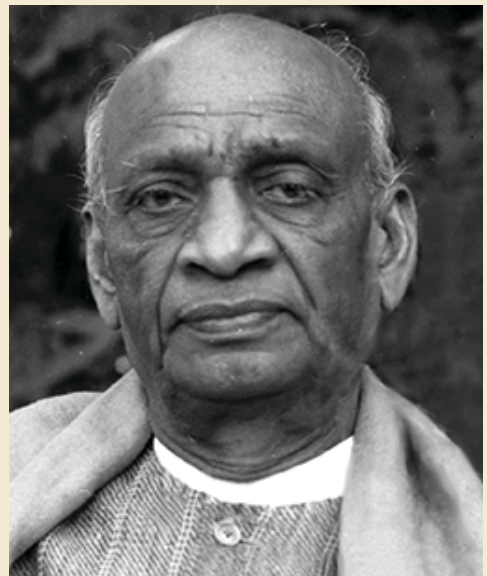
- 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, 565 से अधिक रियासतें थीं, जिनमें से कई भारतीय संघ में शामिल होने के लिए अनिच्छुक थीं।
- प्रथम गृह मंत्री के रूप में, उन्होंने इन राज्यों को एकीकृत करने का महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया। कूटनीति, बातचीत और कभी-कभी दबाव के माध्यम से।
- उन्होंने इन राज्यों को नव स्वतंत्र भारत में एकीकृत करने में सफलता प्राप्त की, जिससे इसकी क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित हुई।

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) की स्थापना

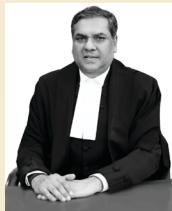
- उन्होंने आईएएस की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो भारत की सिविल सेवाओं की रीढ़ बन गयी।
- उन्होंने आईएएस को भारत का “स्टील फ्रेम” बताया तथा नव स्वतंत्र राष्ट्र में एक मजबूत प्रशासनिक ढांचे के महत्व को स्वीकार किया।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना

- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत की विविध संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं के बावजूद राष्ट्र को एकजुट रहना चाहिए।
- उन्होंने भारत के लोगों में राष्ट्रीय पहचान और एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया, जिससे स्वतंत्रता के बाद देश के पुनर्निर्माण में मदद मिली।



सरदार पटेल

समाचार में अन्य व्यक्तित्व	
विवरण	व्यक्तित्व
चर्चा में क्यों ? भारतीय तटरक्षक बल के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक (सेवानिवृत्त) वीडी चाफेकर को सिंगापुर में एशिया सूचना साझाकरण केंद्र (रीसीएपी आईएससी) में जहाजों के खिलाफ समुद्री डकैती और सशस्त्र डकैती का मुकाबला करने पर क्षेत्रीय सहयोग समझौते के सातवें कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।	 वीडी चाफेकर
चर्चा में क्यों ? - कमला हैरिस को हराने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका के 47 वें राष्ट्रपति के रूप में लौटे। - पिछला कार्यकाल: 2017 - 2021	 डोनाल्ड ट्रम्प
चर्चा में क्यों ? राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने न्यायमूर्ति संजीव खन्ना को भारत के 51 वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ दिलाई।	 न्यायमूर्ति संजीव खन्ना
चर्चा में क्यों ? बंगाली अभिनेता और नाटककार मनोज मित्रा का आज 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने 12 नवंबर को कोलकाता में अंतिम सांस ली।	 मनोज मित्रा
चर्चा में क्यों ? नवनिर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने फ्लोरिडा के सीनेटर मार्को रुबियो को विदेश मंत्री के रूप में कार्य करने के लिए आमंत्रित किया है।	 मार्को रुबियो
चर्चा में क्यों ? संयुक्त राज्य अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कांग्रेसी माइक वाल्ट्ज को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार का पद संभालने के लिए कहा है।	 माइक वाल्ट्ज

सरकारी योजनाएँ

नमो ड्रोन दीदी: कृषि में ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना



चर्चा में क्यों ?

भारत सरकार द्वारा हाल ही में शुरू की गई नमो ड्रोन दीदी योजना का उद्देश्य भारतीय कृषि को आधुनिक बनाना और महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को सशक्त बनाना है। 2024 में शुरू की गई यह पहल कृषि सेवाओं के लिए ड्रोन के साथ 15,000 एसएचजी का समर्थन करती है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत में आय को बढ़ावा देना और खेती की दक्षता में सुधार करना है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम)

- यह ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) का केंद्र प्रायोजित प्रमुख कार्यक्रम है।
- उद्देश्य:
 - ◆ गरीबों, विशेषकर महिलाओं के लिए मजबूत संस्थाओं का निर्माण करके गरीबी कम करना
 - ◆ वित्तीय सेवाओं और आजीविका के अवसरों तक पहुंच सक्षम करना।
- शुरू
 - ◆ स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) से पुनर्गठित।
 - ◆ 29 मार्च 2016 को इसका नाम बदलकर DAY-NRLM कर दिया गया।
- प्रस्तावित लाभ:
 - ◆ स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को वित्तीय और तकनीकी सहायता
 - ◆ कौशल विकास प्रशिक्षण
 - ◆ सूक्ष्म ऋण और अन्य वित्तीय सेवाओं तक पहुंच
 - ◆ उत्पादों और सेवाओं के लिए बाजार संबंध
 - ◆ ग्रामीण गरीबों, विशेषकर महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण

नमो ड्रोन दीदी योजना

- यह एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है।
- उद्देश्य: कीटनाशकों और उर्वरकों के छिड़काव जैसी कृषि सेवाओं के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी प्रदान करके महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को सशक्त बनाना।
- लॉन्च तिथि: नवंबर 2024 भारत सरकार द्वारा।
- पात्रता: दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) के अंतर्गत महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूह (एसएचजी)।
- प्रस्तावित लाभ
 - ◆ स्वयं सहायता समूहों के लिए ड्रोन लागत का 80% (₹8 लाख तक) कवर किया जाता है, शेष लागत के लिए ऋण विकल्प भी उपलब्ध है।
 - ◆ ड्रोन संचालन और कृषि अनुप्रयोग के लिए 15 दिवसीय प्रशिक्षण।
 - ◆ प्रत्येक स्वयं सहायता समूह की वार्षिक आय में कम से कम ₹1 लाख की वृद्धि अपेक्षित है।
 - ◆ कृषि विशेषज्ञों से नेटवर्किंग और समर्थन, विकास और सीखने के अवसर पैदा करना।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना: भारत के शिल्पकारों को सशक्त एवं सम्मानित करना



चर्चा में क्यों ?

सितंबर 2023 में शुरू की गई सरकार की पहल पीएम विश्वकर्मा योजना पूरे भारत में पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को सशक्त बना रही है। इस योजना का उद्देश्य विभिन्न शिल्पों में कुशल व्यक्तियों का समर्थन करके भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना

- यह एक केन्द्र द्वारा वित्तपोषित कार्यक्रम है, जिसका लक्ष्य लोहारी, मिट्टी के बर्तन, बढईगरी और मूर्तिकला जैसे पारंपरिक शिल्पों में लगे कारीगरों या “विश्वकर्मा” पर है।
- अक्सर पीढ़ियों से चली आ रही ये कुशलताएँ भारत की सांस्कृतिक पहचान के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस योजना का उद्देश्य है:

- ◆ कारीगरों के उत्पादों की गुणवत्ता और बाजार पहुंच को बढ़ाना।
- ◆ कारीगरों को घरेलू और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करना।
- **प्रस्तावित लाभ**
 - ◆ लॉन्च के बाद से (4 नवंबर 2024 तक) 25.8 मिलियन से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं।
 - ◆ 2.37 मिलियन कारीगरों ने सफलतापूर्वक पंजीकरण कराया।
 - ◆ लगभग 10 लाख कारीगरों को आधुनिक उपकरण खरीदने के लिए टूलकिट प्रोत्साहन (15,000 रुपये तक) प्राप्त हुए।
 - ◆ टूलिंग तक उन्नत पहुंच से दक्षता और उत्पादकता में सुधार होता है।
 - ◆ उद्योग-तैयार कार्यबल कारीगरों को प्रासंगिक कौशल से सुसज्जित करता है।
 - ◆ प्रक्रिया और उत्पाद विकास पारंपरिक शिल्प की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है।
 - ◆ परामर्श और जॉब वर्क सेवाएं विभिन्न उद्योगों को अनुरूप सहायता प्रदान करती हैं।
- **पात्रता**
 - ◆ **औद्योगिक इकाइयाँ:** मुख्य रूप से एमएसएमई क्षेत्र पर लक्षित।
 - ◆ **प्रशिक्षण कार्यक्रम:** विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों (स्कूल छोड़ने वालों से लेकर एम.टेक डिग्री धारकों तक) के लिए खुला है।
 - ◆ **25 पारंपरिक व्यापार शामिल:** यह योजना विभिन्न प्रकार के पारंपरिक शिल्पों में संलग्न कारीगरों को सहायता प्रदान करती है।
- **कुल परिव्यय:** 2024-25 से 2030-31 के दौरान ₹3,600 करोड़
- **मंत्रालय का शुभारंभ:** शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा
- **लक्षित लाभार्थी:** भारत के शीर्ष 860 उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश पाने वाले मेधावी छात्र
- **ऋण राशि:** ₹10 लाख तक
- **आसान आवेदन के लिए उपयोगकर्ता-अनुकूल डिजिटल पोर्टल**
- **योजना की मुख्य विशेषताएं:**
 - ◆ छात्र बिना किसी जमानत या गारंटर की आवश्यकता के ऋण प्राप्त कर सकते हैं।
 - ◆ 8 लाख रुपये तक की वार्षिक आय वाले परिवारों के छात्र 10 लाख रुपये तक के ऋण पर 3% ब्याज अनुदान के लिए पात्र हैं।
 - ◆ 7.5 लाख रुपये तक के ऋण के लिए सरकार बैंकों को ऋण वितरण में सहायता देने के लिए 75% क्रेडिट गारंटी प्रदान करती है।
 - ◆ उपयोगकर्ता-अनुकूल डिजिटल पोर्टल छात्रों को ऋण और ब्याज अनुदान के लिए आवेदन करने की सुविधा देता है।
 - ◆ इस योजना में सरकारी और निजी दोनों तरह के शीर्ष स्तरीय उच्च शिक्षा संस्थानों को शामिल किया गया है।
- **पात्रता मापदंड:**
 - ◆ छात्र को एनआईआरएफ रैंकिंग द्वारा निर्धारित गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा संस्थान (क्यूएचईआई) में प्रवेश मिलना चाहिए।
 - ◆ ब्याज अनुदान के लिए परिवार की वार्षिक आय 8 लाख रुपये तक होनी चाहिए।
 - ◆ छात्र किसी अन्य सरकारी छात्रवृत्ति या ब्याज अनुदान योजना के लिए पात्र नहीं होना चाहिए।

पीएम विद्या लक्ष्मी योजना



चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई में भारतीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में प्रधानमंत्री विद्या लक्ष्मी शिक्षा योजना को मंजूरी दी है। इस पहल का उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से आने वाले छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है, विशेष रूप से उन लोगों को जिनके परिवार सालाना 8 लाख रुपये से कम कमाते हैं। यह योजना इन छात्रों के लिए उच्च शिक्षा को और अधिक सुलभ बनाने के लिए 3% ब्याज सब्सिडी के साथ 10 लाख रुपये तक का शिक्षा ऋण प्रदान करती है।

पीएम विद्या लक्ष्मी योजना के बारे में

- **लॉन्च तिथि:** 6 नवंबर 2024

वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी):

भारत के भूतपूर्व सैनिकों का सम्मान



चर्चा में क्यों ?

वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी) योजना 2024 में अपनी 10 वीं वर्षगांठ पूरी करेगी, जो भारत के पूर्व सैनिकों के लिए पर्याप्त लाभ और

मान्यता का एक दशक पूरा करेगी, तथा यह सरकार के अपने दिग्गजों के कल्याण के प्रति समर्पण की पुष्टि करेगी।

वन रैंक वन पेंशन योजना के बारे में

- **उद्देश्य :** समान रैंक और समान सेवा अवधि के साथ सेवानिवृत्त होने वाले सैन्य कर्मियों के लिए समान पेंशन सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया गया, चाहे उनकी सेवानिवृत्ति तिथि कुछ भी हो।
- **शुभारंभ :** 2014 में भारत सरकार द्वारा भूतपूर्व सैनिकों के बीच पेंशन असमानताओं को दूर करने के लिए इसे क्रियान्वित किया गया, जो एक प्रमुख नीतिगत बदलाव का प्रतीक है।
- **ऐतिहासिक मांग :** यह मुद्दा 40 वर्षों से अधिक समय तक अनसुलझा रहा, तथा 2014 के सरकार के बजट आवंटन और कार्यान्वयन तक कई सरकारी समितियां समाधान तलाशती रहीं।
- **प्रमुख तत्व :**
 - ◆ **समान पेंशन प्रणाली :** समान रैंक और सेवा अवधि के कर्मिकों के लिए समान पेंशन लाभ।
 - ◆ **पुनर्निर्धारण और आवधिक संशोधन :** पेंशन का हर पांच साल में पुनर्निर्धारण किया जाएगा, जो आरंभ में 2013 की पेंशन दरों पर आधारित होगा।
 - ◆ **बकाया भुगतान :** वीरता पुरस्कार विजेताओं और पारिवारिक पेंशनभोगियों के लिए एकमुश्त भुगतान के साथ अर्ध-वार्षिक किश्तों में प्रदान किया जाता है।
 - ◆ **समावेशी कवरेज :** इसमें 30 जून 2014 तक सेवानिवृत्त होने वाले सभी कर्मिक शामिल हैं।

गृह मंत्रालय ने सीआईएसएफ की पहली महिला बटालियन की स्थापना को मंजूरी दी



चर्चा में क्यों ?

गृह मंत्रालय ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF) के भीतर भारत की पहली महिला बटालियन के गठन को मंजूरी दे दी है। यह निर्णय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा 53 वें CISF दिवस समारोह के दौरान की गई घोषणा के बाद लिया गया है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा भूमिकाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाना और सशस्त्र बलों में महिलाओं को अधिक अवसर प्रदान करना है। बटालियन की स्थापना राष्ट्रीय सुरक्षा में लैंगिक समानता में योगदान देगी।

सीआईएसएफ के बारे में

- यह भारत में केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF) है।
- इसकी स्थापना 10 मार्च 1969 को भारतीय संसद के एक अधिनियम के तहत की गई थी।
- तत्पश्चात् 15 जून 1983 को संसद द्वारा पारित एक अन्य अधिनियम द्वारा इसे भारत गणराज्य का सशस्त्र बल बना दिया गया।
- तब से यह बल एक प्रमुख बहु-कुशल संगठन में विकसित हो गया है, जिसकी वर्तमान संख्या 1,88,000 से अधिक कर्मियों की है।
- यह सीधे केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधीन है और इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।
- वर्तमान में सीआईएसएफ देश भर में 359 प्रतिष्ठानों को सुरक्षा प्रदान करता है।

OROP का पूर्व सैनिकों पर प्रभाव

निरंतर प्रासंगिकता
नियमित पेंशन
समायोजन नीति की
प्रासंगिकता बनाए
रखता है

सामाजिक और
भावनात्मक प्रभाव

सरकार-सेना के
संबंधों को मजबूत
किया गया



लाभार्थी

25 लाख से अधिक
सेवानिवृत्त सैनिक
और उनके परिवार

उन्नत जीवन स्तर

जीवन की गुणवत्ता में
सुधार और मान्यता

OROP के प्रभाव



CISF: लोगो

● संगठन की संरचना :

- ◆ इसका नेतृत्व महानिदेशक स्तर का भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी करता है , तथा अतिरिक्त महानिदेशक स्तर का एक आईपीएस अधिकारी उनकी सहायता करता है।
- ◆ बल को सात सेक्टरों (हवाई अड्डा, उत्तर, उत्तर-पूर्व, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और प्रशिक्षण) में विभाजित किया गया है।
- ◆ बल में एक अग्निशमन सेवा विंग भी है।

कैबिनेट ने एक राष्ट्र एक सदस्यता (ओएनओएस) को मंजूरी दी



चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ONOS) योजना को मंजूरी दी है। यह एक अभूतपूर्व पहल है जिसका उद्देश्य देश भर में अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों की पत्रिकाओं और शोध प्रकाशनों तक पहुँच प्रदान करना है। यह योजना भारत के महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण विकसित भारत@2047 का हिस्सा है और इसे पूरे देश में शोध पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ONOS) के बारे में

- यह एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है जो सरकारी उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) और अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय उच्च प्रभाव वाले शोध लेखों और विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाओं तक पहुँच को अधिकतम करने पर केंद्रित है।
- **प्रारंभ :** अनुसंधान सुलभता में अंतराल को दूर करने के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित।
- **उद्देश्य :** उच्च शिक्षा संस्थानों और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाओं तक समावेशी पहुँच को सक्षम बनाना।
- **वित्तीय आवंटन :** इस योजना के लिए 6,000 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है, जो कैलेंडर वर्ष 2025, 2026 और 2027 को कवर करेगा।
- **प्रभाव :** अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करता है , विशेष रूप से कम प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्रों में।

- **संरचना :** एनईपी 2020 और आत्मनिर्भर भारत के व्यापक दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

- **समन्वय :** इनफ्लिबनेट द्वारा प्रबंधित , निर्बाध पहुँच के लिए उपयोगकर्ता-अनुकूल और डिजिटल प्लेटफॉर्म सुनिश्चित करना।

● दायरा

- ◆ इसमें 30 प्रमुख अंतरराष्ट्रीय जर्नल प्रकाशक शामिल हैं, जो लगभग 13,000 ई-जर्नल तक पहुँच प्रदान करते हैं।
- ◆ इसका लाभ 6,300 से अधिक सरकारी संस्थानों को मिलेगा , जिसमें 1.8 करोड़ छात्र, संकाय और शोधकर्ता शामिल होंगे।

● कार्यान्वयन

- ◆ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के तहत एक स्वायत्त अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र, सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क (इनफ्लिबनेट) समन्वय एजेंसी के रूप में कार्य करेगा।
- ◆ इस योजना को निर्बाध पहुँच के लिए एक सरल, पूर्णतया डिजिटल प्रक्रिया के माध्यम से संचालित किया जाएगा।

● महत्व

- ◆ वैश्विक अनुसंधान ज्ञान तक पहुँच का विस्तार , मुख्य और अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देना, विशेष रूप से टियर 2 और टियर 3 शहरों के छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए।
- ◆ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 , अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) , और आत्मनिर्भर भारत के उद्देश्यों का समर्थन करता है।

● उपयोग की सरलता

- ◆ उच्च शिक्षा विभाग के तहत संस्थानों द्वारा पत्रिकाओं तक पहुँच के लिए एक एकीकृत पोर्टल विकसित किया जाएगा।
- ◆ अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा जागरूकता अभियान चलाए जाएंगे।

● दीर्घकालिक दृष्टि

- ◆ इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने और भारतीय लेखकों द्वारा प्रकाशन को प्रोत्साहित करने के लिए एनआरएफ द्वारा नियमित समीक्षा की जाती है।
- ◆ अनुसंधान संसाधनों को सार्वभौमिक रूप से सुलभ बनाकर वैश्विक अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में भारत के एकीकरण में योगदान देता है।

रेलवे में 'कवच' प्रणाली की तैनाती



चर्चा में क्यों ?

केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने हाल ही में लोकसभा में भारत की स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली कवच की प्रगति के बारे में अद्यतन जानकारी दी।

महत्वपूर्ण प्रगति में शामिल हैं

- जुलाई 2024 में स्वीकृत कवच संस्करण 4.0 की तैनाती, उन्नत सुरक्षा सुविधाओं के साथ।
- 1548 किलोमीटर मार्ग पर सफल कार्यान्वयन तथा दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा जैसे प्रमुख कॉरिडोर पर 3000 किलोमीटर मार्ग को कवर करने वाला कार्य जारी है।
- 10,000 इंजनों को सुसज्जित करने तथा कवच को अतिरिक्त 15,000 आर.के.एम. रेलवे ट्रैक तक विस्तारित करने की योजना है।
- वित्त वर्ष 2024-25 में कवच कार्यान्वयन के लिए ₹1112.57 करोड़ का आवंटन।

रेलवे में कवच प्रणाली क्या है ?

- यह स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली है जिसे भारतीय रेलवे पर ट्रेन सुरक्षा बढ़ाने और दुर्घटनाओं को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह उन्नत प्रणाली सुरक्षा अखंडता स्तर (एसआईएल-4) प्रमाणन को पूरा करती है, जो परिचालन सुरक्षा के उच्चतम स्तर को सुनिश्चित करती है।
- कवच की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:
 - ◆ जब ट्रेन निर्दिष्ट गति सीमा से अधिक हो जाती है या लोको पायलट कार्य करने में विफल रहता है तो स्वचालित ब्रेक लग जाता है।
 - ◆ प्रतिकूल मौसम की स्थिति के दौरान सुरक्षित रेल परिचालन में सहायता करना।

पुरस्कार और सम्मान

भारतीय संगीतकार रिकी

केज और अनुष्का शंकर 67

वें ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामांकित



चर्चा में क्यों ?

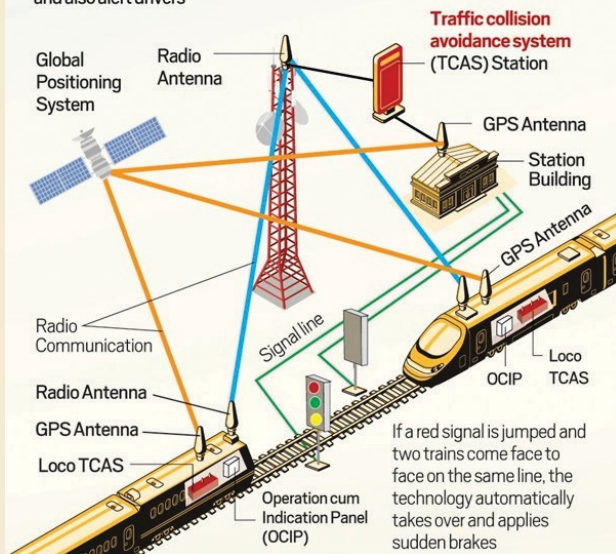
भारतीय संगीतकार रिकी केज और अनुष्का शंकर को 2 फरवरी 2025 को लॉस एंजिल्स में होने वाले 67 वें ग्रैमी अवॉर्ड्स के लिए नामांकन मिला है। तीन बार ग्रैमी जीतने वाले केज को उनके एल्बम ब्रेक ऑफ डॉन के लिए बेस्ट न्यू एज, एम्बिएंट या चैंट एल्बम श्रेणी में नामांकित किया गया था। सितार वादक अनुष्का शंकर को भी उनके एल्बम चैप्टर II: हाउ डार्क इट इज़ बिफोर डॉन के लिए इस श्रेणी में नामांकित किया गया था। उनके नामांकन भारतीय संगीत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव का जश्न मनाते हैं।

ग्रैमी पुरस्कार के बारे में

- **स्थापना:** 1959 में नेशनल एकेडमी ऑफ रिकॉर्डिंग आर्ट्स एंड साइंसेज (एनएआरएस) द्वारा।
- ◆ विभिन्न संगीत शैलियों में असाधारण उपलब्धियों का सम्मान करना।

HOW RAILWAYS' KAVACH PROTECTION SYSTEM WORKS

KPS is a set of electronic and radio frequency devices installed in locomotives, in the signalling system as well the tracks, that talk to each other using ultra-high radio frequencies to control the brakes of trains and also alert drivers



कवच प्रणाली

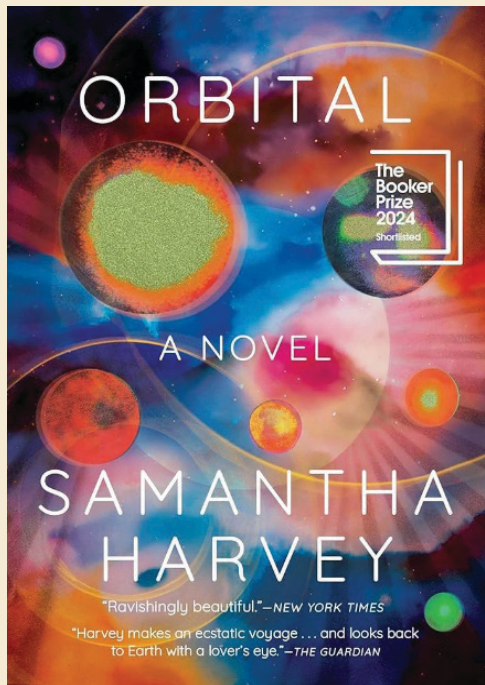
- यह उत्कृष्ट संगीत प्रतिभा और नवाचार को मान्यता देता है तथा 80 से अधिक श्रेणियों में उत्कृष्टता के लिए कलाकारों को पुरस्कृत करता है।
- विजेताओं को वैश्विक मान्यता, उन्नत कैरियर के अवसर और संगीत उत्कृष्टता का प्रतीक ग्रैमी ट्रॉफी मिलेगी।
- **चयन प्रक्रिया:** ग्रैमी चयन में NARAS सदस्यों द्वारा दो-चरणीय मतदान प्रक्रिया शामिल होती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि पुरस्कार कलात्मक योग्यता पर आधारित हों, जिससे ग्रैमी नामांकन संगीत जगत में एक प्रतिष्ठित सम्मान बन जाता है।

सामंथा हार्वे ने अपने उपन्यास ऑर्बिटल के लिए 2024 का बुकर पुरस्कार जीता



चर्चा में क्यों ?

सामंथा हार्वे ने अपने उपन्यास ऑर्बिटल के लिए 2024 का बुकर पुरस्कार जीता है, यह सम्मान पाने वाली पहली अंतरिक्ष-थीम वाली किताब है। यह उपन्यास, जो अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर अंतरिक्ष यात्रियों का अनुसरण करता है, शॉर्टलिस्ट में यूके की सबसे अधिक बिकने वाली किताब बन गई है, जिसने पिछले तीन बुकर विजेताओं को पीछे छोड़ दिया है। 2019 के बाद से जीतने वाली पहली महिला हार्वे को ₹ 50,000 मिलेंगे।



ऑर्बिटल

सामंथा हार्वे की अन्य कृतियाँ

- जंगली इलाका
- सब गीत है
- प्रिय चोर
- पश्चिमी हवा
- द शेपलेस अनईज (केवल गैर-काल्पनिक)

नाइजीरिया ने प्रधानमंत्री मोदी को 'द ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर अवार्ड' से सम्मानित किया



चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नाइजीरिया के 'ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसे उन्होंने भारत को समर्पित किया। अपनी यात्रा के दौरान, जो 17 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा थी, उन्होंने नाइजीरिया के लिए 20 टन बाढ़ सहायता की घोषणा की और ब्रिक्स में शामिल होने पर उसे बढ़ाई दी। भारत-नाइजीरिया संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए समझौता ज्ञापनों का आदान-प्रदान किया गया।



नाइजीरिया का मानचित्र

नाइजीरिया के बारे में

- राजधानी : अबुजा
- मुद्रा : नाइजीरियाई नायरा (एनजीएन)
- राजनीतिक संरचना : संघीय राष्ट्रपति गणराज्य
- स्वतंत्रता : 1 अक्टूबर 1960, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से

● अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ :

- ◆ इसकी सीमा बेनिन (पश्चिम), नाइजर (उत्तर), चाड (उत्तर-पूर्व) और कैमरून (पूर्व) से लगती है।
- ◆ दक्षिणी सीमा अटलांटिक महासागर (गिनी की खाड़ी) के साथ है।

● राष्ट्रपति : बोला अहमद टीनुबू (2024 तक)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को डोमिनिक सम्मान से सम्मानित किया गया



चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कोविड-19 महामारी के दौरान उनके राजनेतापन और समर्थन के लिए डोमिनिका का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान “डोमिनिक अवार्ड ऑफ ऑनर” प्रदान किया गया। गुयाना में दूसरे भारत-कैरिबिअन शिखर सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति सिल्वेनी बर्टन द्वारा प्रदान किया गया यह पुरस्कार डोमिनिका के साथ भारत के गहरे होते संबंधों का जश्न मनाता है। पीएम मोदी ने इसे भारत के लोगों और उनके साझा सांस्कृतिक संबंधों को समर्पित किया।



प्रधानमंत्री को गुयाना के उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया

डोमिनिका राष्ट्रमंडल के बारे में

- डोमिनिका राष्ट्रमंडल कैरेबियन सागर में स्थित एक छोटा सा द्वीप राष्ट्र है। इसे “कैरेबियन का प्राकृतिक द्वीप” के नाम से जाना जाता है।
- डोमिनिका में हरे-भरे वर्षावन, ज्वालामुखीय परिदृश्य और विविध वनस्पतियाँ और जीव हैं।
- राजधानी : रोसेउ
- मुद्रा : पूर्वी कैरेबियाई डॉलर (XCD)

- राजनीतिक व्यवस्था : डोमिनिका एक संसदीय गणराज्य है। राष्ट्रपति राज्य के प्रमुख के रूप में कार्य करता है, जबकि प्रधानमंत्री सरकार का मुखिया होता है।

- स्वतंत्रता दिवस : डोमिनिका को 3 नवंबर 1978 को ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिली।

- यह कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है , जिनमें शामिल हैं:

- ◆ संयुक्त राष्ट्र (यूएन)
- ◆ राष्ट्रमंडल राष्ट्र
- ◆ कैरेबियाई समुदाय (CARICOM)
- ◆ अमेरिकी राज्यों का संगठन (OAS)
- ◆ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ)
- ◆ विश्व बैंक
- ◆ विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ)
- ◆ पूर्वी कैरेबियाई मुद्रा संघ (ईसीसीयू)



- प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ :

- ◆ कृषि : केले, नारियल और अन्य उष्णकटिबंधीय फलों का अग्रणी उत्पादक।

- ◆ **पर्यटन** : द्वीप के प्राचीन समुद्र तट, गर्म झरने और पारिस्थितिक पर्यटन आकर्षण पर्यटन को एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाते हैं।
- ◆ **नवीकरणीय ऊर्जा** : डोमिनिका सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए भूतापीय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है।
- ◆ **मत्स्य पालन** : द्वीप के आसपास का जल समुद्री संसाधनों से समृद्ध है, जो मछली पकड़ने की गतिविधियों को बढ़ावा देता है।

- **राजधानी** : जॉर्जटाउन
- **मुद्रा** : गुयानीज़ डॉलर (GYD)
- **राजनीतिक प्रणाली** :
 - ◆ यह एक एकात्मक संसदीय गणतंत्र है।
 - ◆ राष्ट्रपति राज्य और सरकार दोनों के प्रमुख के रूप में कार्य करता है, तथा एक **सदनीय राष्ट्रीय सभा** विधायी शाखा का निर्माण करती है।
- **स्वतंत्रता दिवस** : गुयाना को 26 मई, 1966 को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त हुई।
- **प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ** :
- **तेल और गैस** : महत्वपूर्ण अपतटीय तेल खोजों के बाद गुयाना वैश्विक तेल उद्योग में एक प्रमुख खिलाड़ी बन गया है।
- **कृषि** : प्रमुख निर्यातों में चावल, चीनी और अन्य उष्णकटिबंधीय उत्पाद शामिल हैं।
- **खनन** : गुयाना प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जिसमें सोना, बॉक्साइट और हीरे शामिल हैं।
- **वानिकी और मत्स्य पालन** : देश के विस्तृत वर्षावन और नदियाँ आर्थिक मूल्य प्रदान करते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी को गुयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया



चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनके दूरदर्शी नेतृत्व, विकासशील देशों के लिए वैश्विक वकालत और भारत-गुयाना संबंधों को मजबूत करने के प्रयासों के लिए 20 नवंबर 2024 को गुयाना का सर्वोच्च सम्मान “द ऑर्डर ऑफ़ एक्सीलेंस” प्रदान किया जाएगा। अपने भाषण में उन्होंने इस पुरस्कार को भारत के लोगों को समर्पित किया और दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और बढ़ती दोस्ती पर जोर दिया।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गुयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया

सहकारी गणराज्य गुयाना के बारे में

- यह दक्षिण अमेरिका के उत्तरी तट पर स्थित है, तथा अपने हरे-भरे वर्षावनों, जीवंत संस्कृति और उभरती अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है।
- यह दक्षिण अमेरिका का एकमात्र अंग्रेजी भाषी देश है, जो कैरेबियाई क्षेत्र के साथ मजबूत संबंध बनाए हुए है।



गुयाना गणराज्य का मानचित्र

- **अंतर्राष्ट्रीय संगठन**: यह कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भागीदार है, जिनमें शामिल हैं:
- संयुक्त राष्ट्र (यूएन)

- कैरेबियाई समुदाय (CARICOM)
- राष्ट्रमंडल राष्ट्र
- अमेरिकी राज्यों का संगठन (OAS)
- विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ)
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ)
- विश्व बैंक

भारतीय रासायनिक परिषद ने 2024

ओपीसीडब्ल्यू-द हेग पुरस्कार जीता

- **कुंजी टैग:** समसामयिक मामले
- **पी टैग:** विविध
- **एस टैग:** पुरस्कार और सम्मान
- **मेटा कीवर्ड:** भारतीय रासायनिक परिषद, आईसीसी, ओपीसीडब्ल्यू-द हेग पुरस्कार 2024, रासायनिक सुरक्षा, रासायनिक हथियार सम्मेलन, सीडब्ल्यूसी, रासायनिक हथियारों के निषेध के लिए संगठन, एनएसीडब्ल्यूसी इंडिया, रासायनिक उद्योग भारत, नाइसर ग्लोब पहल, जिम्मेदार देखभाल कार्यक्रम, रासायनिक अनुपालन, रासायनिक परिवहन सुरक्षा, रासायनिक हथियार उन्मूलन, वैश्विक रासायनिक सुरक्षा, आईसीसी उपलब्धियां, भारतीय रासायनिक उद्योग, 2024 पुरस्कार, रासायनिक सुरक्षा, आईसीसी मान्यता।
- **मेटा विवरण:** भारतीय रासायनिक परिषद (ICC) को रासायनिक सुरक्षा, अनुपालन और सुरक्षा को आगे बढ़ाने के लिए 2024 OPCW-द हेग पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसमें वैश्विक रासायनिक उद्योग मानकों में भारत के नेतृत्व और रासायनिक हथियार सम्मेलन (CWC) के कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला गया।
- **एसडी:** भारतीय रासायनिक परिषद ने रासायनिक सुरक्षा और अनुपालन में उत्कृष्टता के लिए 2024 ओपीसीडब्ल्यू-द हेग पुरस्कार जीता।



चर्चा में क्यों?

भारतीय रासायनिक परिषद (ICC) को 25 नवंबर 2024 को रासायनिक हथियारों के निषेध संगठन (OPCW) के राज्यों के

सम्मेलन (CSP) के 29 वें सत्र के दौरान हेग में 2024 OPCW-द हेग पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पहली बार है जब किसी रासायनिक उद्योग निकाय को यह प्रतिष्ठित मान्यता मिली है। यह पुरस्कार रासायनिक हथियार सम्मेलन (CWC) के उद्देश्यों के साथ संरेखित करते हुए रासायनिक सुरक्षा, अनुपालन और औद्योगिक सुरक्षा में ICC के योगदान का जश्न मनाता है।

ओपीसीडब्ल्यू-द हेग पुरस्कार के बारे में

- **स्थापना:** 2014
 - ◆ रासायनिक हथियारों को खत्म करने के प्रयासों के लिए ओपीसीडब्ल्यू को 2013 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला।
- **उद्देश्य:** रासायनिक हथियार सम्मेलन (सीडब्ल्यूसी) के लक्ष्यों में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले व्यक्तियों और संगठनों को सम्मानित करना।
 - ◆ वह रासायनिक हथियारों से मुक्त विश्व चाहता है।
- **प्रस्तुतकर्ता:** ओ.पी.सी.डब्ल्यू के महानिदेशक और हेग के मेयर।
- **भारत की भूमिका:**
 - ◆ भारत सीडब्ल्यूसी का संस्थापक सदस्य है।
 - ◆ भारत वैश्विक रासायनिक सुरक्षा प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
 - ◆ राष्ट्रीय रासायनिक हथियार अभिसमय प्राधिकरण (एनएसीडब्ल्यूसी) भारत में सीडब्ल्यूसी के निर्देशों को क्रियान्वित करता है।

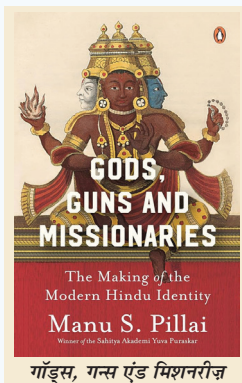
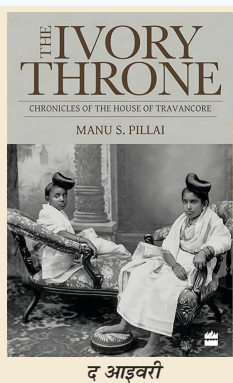
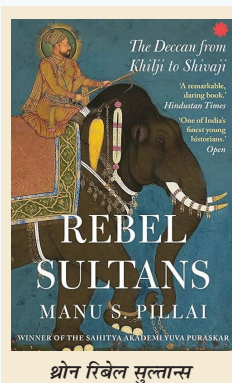
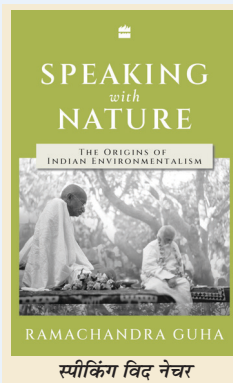


2024 ओपीसीडब्ल्यू द हेग पुरस्कार भारतीय रासायनिक परिषद (आईसीसी) को प्रदान किया गया

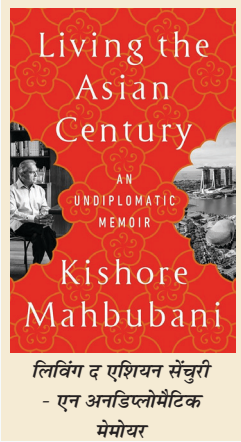
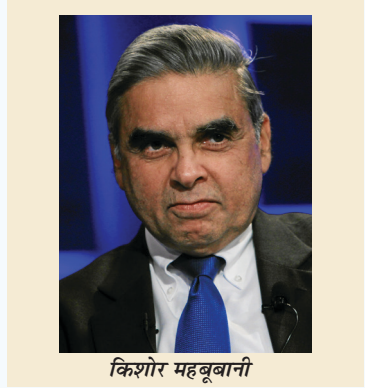
भारतीय रासायनिक परिषद (आईसीसी) के बारे में

- **स्थापना:** 1938.
- **दायरा:** भारत के रसायन उद्योग के 80% से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका मूल्य 220 बिलियन डॉलर है।
- **महत्वपूर्ण पहल:**
 - ◆ **रासायनिक हथियार अभिसमय हेल्पडेस्क:** ई-फाइलिंग की सुविधा प्रदान करता है और अनुपालन को बढ़ाता है।
 - ◆ **नाइसर ग्लोब पहल:** वास्तविक समय निगरानी और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणालियों के माध्यम से रासायनिक परिवहन सुरक्षा में सुधार करता है।
 - ◆ **उत्तरदायी देखभाल कार्यक्रम:** संरचित स्व-नियमन के माध्यम से उद्योग सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।
- **उद्देश्य:**
 - ◆ नीतिगत परिवर्तनों की वकालत करें और अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा दें।
 - ◆ औद्योगिक प्रथाओं में सुधार करें और सतत विकास को बढ़ावा दें।
 - ◆ निर्यात को बढ़ावा देना और मूल प्रमाण-पत्र जैसे वैश्विक मानक प्रमाणन सुनिश्चित करना।
- **मान्यता:** यह पुरस्कार विश्व के सबसे बड़े रासायनिक क्षेत्रों में से एक में सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए आईसीसी की प्रतिबद्धता को उजागर करता है।

पुस्तकें एवं लेखक

पुस्तकें	लेखक
 गॉड्स, गन्स एंड मिशनरीज़	 मनु एस. पिल्लई
 द आइवरी	
 श्रेण रिबेल सुल्तान्स	
 स्पीकिंग विद नेचर	 रामचंद्र गुहा

Contd...

पुस्तकें	लेखक
 Living the Asian Century AN UNDIPLOMATIC MEMOIR Kishore Mahbubani लिविंग द एशियन सेंचुरी - एन अनडिप्लोमैटिक मेमोयर	 किशोर महबूबानी

रिपोर्ट और पत्रिकाएँ

भारत ने पेटेंट, ट्रेडमार्क और औद्योगिक डिजाइन में शीर्ष 10 देशों में स्थान हासिल किया: डब्ल्यूआईपीओ 2024 रिपोर्ट



चर्चा में क्यों ?

विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) की विश्व बौद्धिक संपदा संकेतक (WIPO) 2024 रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने 2023 में पेटेंट आवेदनों में उल्लेखनीय 15.7% की वृद्धि हासिल की है। यह वृद्धि पेटेंट में भारत की लगातार पाँचवीं दोहरे अंकों की वृद्धि को दर्शाती है और एक अग्रणी वैश्विक नवप्रवर्तक के रूप में इसकी स्थिति को और मजबूत करती है। यह वृद्धि देश के विस्तारित बौद्धिक संपदा (IP) पारिस्थितिकी तंत्र और विनिर्माण, रचनात्मकता और नवाचार पर इसके बढ़ते फोकस को उजागर करती है।

विश्व बौद्धिक संपदा संगठन के बारे में

- 1967 में स्थापित।
- यह संयुक्त राष्ट्र (यूएन) एजेंसी है।
- उद्देश्य: रचनात्मक गतिविधि को प्रोत्साहित करना, दुनिया भर में बौद्धिक संपदा के संरक्षण को बढ़ावा देना।
- सदस्य: वर्तमान में इसके 193 सदस्य देश हैं (भारत भी इसका सदस्य है)।
- संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश विशिष्ट एजेंसियों के सदस्य बनने के हकदार हैं, यद्यपि वे इसके लिए बाध्य नहीं हैं।
- मुख्यालय: जिनेवा, स्विटजरलैंड

